www.railsamacharbureauald.com

संपूर्ण भारतीय रेल जगत का प्रथम पाक्षिक, प्रयागराज से प्रकाशित

रेल समाचार ब्यूरो

सन् 1990 से रेल सेवा में समर्पित

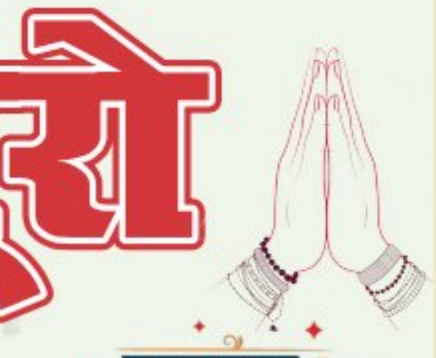

वर्ष-36 अंक:01 रेल समाचार ब्यूरो प्रयागराज 01-15 जनवरी 2026 पृष्ठ 08, मूल्य:20 रु. मात्र. डाक खर्च (रंगीन सहित)

रेलवे का विजन 2030 प्रमुख शहरों में ट्रेन संचालन क्षमता को दोगुना करने की रूपरेखा

व्यस्त स्टेशनों पर यातायात सुगम बनाने के लिए क्षमता वृद्धि के लाभों को प्राप्त करने हेतु जोन से अल्पकालिक और मध्यम अवधि के उपायों की मांग की गई है

सूत्र/रे.स.ब्यू- यात्रा की मांग में लगातार हो रही तीव्र वृद्धि को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेलवे ने अगले पाँच वर्षों में प्रमुख शहरों में रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता को वर्तमान स्तर से दोगुना करने की योजना बनाई है। आगामी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ किया जाएगा, जिसके तहत मौजूदा टर्मिनलों पर अतिरिक्त प्लेटफॉर्म, स्टेबलिंग लाइन, पिट लाइन और पर्याप्त शंटिंग सुविधाएँ विकसित की जाएँगी। इसके साथ ही शहरी क्षेत्रों एवं उनके आसपास नए टर्मिनलों की पहचान और निर्माण, मेगा कोचिंग कॉम्प्लेक्स सहित रखरखाव सुविधाओं का विस्तार तथा विभिन्न स्थानों पर रेल गाड़ियों की बढ़ती संख्या को संभालने के लिए यातायात सुविधा कार्यों, सिग्नलिंग उन्नयन और मल्टीट्रैकिंग के माध्यम से अनुभागीय क्षमता में वृद्धि की जाएगी। वर्ष 2030 तक संचालन क्षमता को दोगुना करने के लक्ष्य के साथ यह योजना चरणबद्ध रूप से लागू की जाएगी।

टर्मिनलों की क्षमता बढ़ाने की योजना बनाते समय, टर्मिनलों के आसपास के स्टेशनों को भी ध्यान में रखा जाएगा ताकि क्षमता में संतुलन बना रहे। उदाहरण के लिए, पुणे के लिए, पुणे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म और स्टेबलिंग लाइनों को बढ़ाने के साथ-साथ हडपसर, खड़की और आलंदी स्टेशनों की क्षमता बढ़ाने पर विचार किया गया है।

उपरोक्त प्रक्रिया उपनगरीय और गैर-उपनगरीय दोनों प्रकार के यातायात के लिए की जाएगी, जिसमें दोनों खंडों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाएगा। 48 प्रमुख शहरों की एक व्यापक योजना विचाराधीन है (सूची संलग्न है)। इस योजना में निर्धारित समय सीमा के भीतर रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नियोजित, प्रस्तावित या पहले से स्वीकृत कार्यों को शामिल किया जाएगा।

क्षमता को वर्ष 2030 तक दोगुना करने की योजना है, लेकिन यह आशा है कि अगले 5 वर्षों में क्षमता में क्रमिक वृद्धि की जाएगी ताकि क्षमता वृद्धि के लाभ तुरंत प्राप्त किए जा सकें। इससे आने वाले वर्षों में यातायात की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने में सहायता मिलेगी। योजना में कार्यों को तीन श्रेणियों, अर्थात् तत्काल, अल्पकालिक और दीर्घकालिक में वर्गीकृत किया जाएगा। प्रस्तावित योजनाएँ विशिष्ट होंगी, जिनमें स्पष्ट समयसीमा और परिभाषित परिणाम होंगे। यद्यपि यह अभ्यास विशिष्ट स्टेशनों पर केंद्रित है, प्रत्येक क्षेत्रीय रेलवे को अपने-अपने मंडलों में रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता बढ़ाने की योजना बनाने के लिए कहा गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि न केवल टर्मिनल क्षमता में वृद्धि हो, बल्कि स्टेशनों और यार्डों पर अनुभागीय क्षमता और परिचालन संबंधी बाधाओं का भी प्रभावी ढंग से समाधान किया जाए।

केंद्रीय रेल मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, "हम यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए विभिन्न शहरों में कोचिंग टर्मिनलों का विस्तार कर रहे हैं और अनुभागीय एवं परिचालन क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। इस कदम से हमारे रेलवे नेटवर्क का उन्नयन होगा और राष्ट्रव्यापी संपर्क सुविधा में सुधार होगा।"

क्रम	शहर का नाम	क्रम	शहर का नाम
1	दिल्ली	24	उज्जैन
2	मुंबई (सीआर, डब्ल्यूआर)	25	जम्मू
3	कोलकाता (ईआर, एसईआर, कोलकाता मेट्रो)	26	जोधपुर
		27	जयपुर
4	चेन्नई	28	वडोदरा
5	हैदराबाद	29	सूरत
6	बेंगलुरु	30	मडगांव
7	अहमदाबाद	31	कोच्चि
8	पटना	32	पुरी
9	लखनऊ (एनआर, एनईआर)	33	भुवनेश्वर
10	पुणे	34	विशाखापट्टनम
11	नागपुर (सीआर, एसईसीआर)	35	विजयवाड़ा
12	वाराणसी (एनआर, एनईआर)	36	तिरुपति
13	कानपुर	37	हरिद्वार
14	गोरखपुर	38	गुवाहाटी
15	मथुरा	39	भागलपुर
16	अयोध्या	40	मुजफ्फरपुर
17	आगरा	41	दरभंगा
18	पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन	42	गया
19	चंडीगढ़	43	मैसूर
20	लुधियाना	44	कोयंबटूर
21	अमृतसर	45	तातानगर
22	इंदौर	46	रांची
23	भोपाल	47	रायपुर
		48	बरेली

गति शक्ति विश्वविद्यालय (जीएसवी) समुद्री क्षेत्र, ब्रिज एवं टनल इंजीनियरिंग, रक्षा लॉजिस्टिक्स और मल्टीमॉडल परिवहन योजना को आगे बढाएगा - श्री अश्विनी वैष्णव

सूत्र/रे.स.ब्यू- गति शक्ति विश्वविद्यालय (जीएसवी) ने नई दिल्ली के रेल भवन में अपनी दूसरी कोर्ट मीटिंग आयोजित की। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में श्री अश्विनी वैष्णव (रेलवे, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री) ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जीएसवी ने अपने परिचालन के तीन वर्षों के अंदर ही उद्योग-उन्मुख दृष्टिकोण के साथ अभूतपूर्व प्रगति की है और देश के लिए एक आदर्श संस्थान बन गया है। रेलवे और विमानन क्षेत्रों पर अपना मजबूत ध्यान केंद्रित करते हुए, जीएसवी पुल और सुरंग इंजीनियरिंग, समुद्री क्षेत्र (जहाज निर्माण पर विशेष) के पाठ्यक्रम को और अधिक व्यापक बनाएगा, रक्षा बलों और रेलवे के कौशल विकास में अधिक योगदान देगा और एकीकृत परिवहन योजना के लिए व्यावहारिक अनुसंधान करेगा।

इस बैठक में शुभांगिनी राजे गायकवाड़ (बड़ौदा की राजमाता), श्री सतीश कुमार (अध्यक्ष एवं सीईओ, रेलवे बोर्ड), लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेंद्र सिंह (सेना के उप प्रमुख), श्री अमरदीप सिंह भाटिया (सचिव, डीपीआई-आईटी), श्री टीपी सिंह (डीजी-बीआई-एसएजी), प्रोफेसर रजत मूना (निदेशक, आईआईटी जीएन), नागरिक उड्डयन मंत्रालय, एमओआरटीएच, एल एंड टी, एएमडी जैसे प्रमुख उद्योगों के प्रतिनिधि और गति शक्ति विश्वविद्यालय के पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रोफेसर मनोज चौधरी (कुलपति, जीएसवी) ने प्रगति और स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभी सदस्यों ने इतने कम समय में विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट प्रगति, विशेष रूप से उद्योग जगत के साथ सहयोग, रेलवे और रक्षा बलों के लिए कार्यकारी प्रशिक्षण तथा सिविल सेवाओं के लिए पीएम गति शक्ति कार्यक्रम की भरपूर प्रशंसा की। कोर्ट के सदस्यों ने पुल और सुरंग इंजीनियरिंग, जहाज निर्माण, रेलवे, रक्षा क्षेत्र, रसद और आपूर्ति श्रृंखला में भविष्य की प्रगति के लिए कई सुझाव और सहयोगात्मक इनपुट दिए। सेना उप-प्रमुख ने भारतीय सेना की संबंधित अकादमियों को विश्वविद्यालय से संबद्ध करने के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दायरे और विस्तार को बढ़ाने की वकालत की। विश्वविद्यालय इस वर्ष से भारतीय रेल प्रबंधन सेवा (आईआरएमएस) अधिकारियों के लिए परिवीक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार एवं संचालित करेगा तथा अधिक चेयर प्रोफेसरशिप की स्थापना के लिए उद्योगों के साथ मिलकर काम करेगा।

इस अवसर पर, भास्कराचार्य अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना संस्थान (बीआई-एसएजी) और गति शक्ति विश्वविद्यालय ने पीएम गति शक्ति को और गति देने के लिए समझौता ज्ञापन की घोषणा की, जबकि एडवांस्ड माइक्रो डिवाइसेस (एएमडी) ने गति शक्ति विश्वविद्यालय में इनक्यूबेशन सुविधा के लिए वित्तीय सहायता की घोषणा की। अतिरिक्त कैंपस इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जा रहा है और अतिरिक्त कैंपस के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया जाएगा, जिसके लिए भूमि का अधिग्रहण पहले ही किया जा चुका है। विश्वविद्यालय की वित्तीय वर्ष 2024-2025 की वार्षिक रिपोर्ट और वार्षिक लेखा को भी संसद के समक्ष प्रस्तुत करने की मंजूरी दी गई।

Scanned with OKEN Scanner

नई सोच, नई रफ्तार: 21वीं सदी की मेगा इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं से भारतीय रेलवे का परिवर्तन

इंजीनियरिंग के चमत्कार- चेनाब ब्रिज, न्यू पंबन ब्रिज और बैराबी सैरांग लाइन, यात्रा और आर्थिक गतिविधियों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पूर्वोत्तर के 60 स्टेशनों का विकास कार्य जारी है

सूत्र/रे.स.ब्यू- भारतीय रेलवे 21वीं सदी की कुछ सबसे महत्वाकांक्षी ढांचागत परियोजनाओं को अंजाम दे रहा है। ये परियोजनाएं राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर रही हैं, रसद व्यवस्था में सुधार कर रही हैं और आधुनिक रेलवे नेटवर्क का विस्तार कर रही हैं। दुर्गम भूभागों में बने प्रतिष्ठित पुलों से लेकर माल ढुलाई गलियारों और हाई-स्पीड रेल तक, ये परियोजनाएं भारत की बढ़ती इंजीनियरिंग क्षमता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण को दुनिया को सामने रख रही हैं।

सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल)। यह एक अत्यंत रणनीतिक और राष्ट्रीय महत्व की परियोजना है। करीब 44,000 करोड़ रुपए की लागत से तैयार, 272 किलोमीटर लंबी यह रेल पटरी हिमालयी क्षेत्र से होकर गुजरती है। इस परियोजना में चिनाब रेल पुल भी शामिल है, जो विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे मेहराबदार पुल है। यह नदी से 359 मीटर ऊपर स्थित है, जो एफिल टॉवर से भी ऊंचा है। यह 1,315 मीटर लंबा स्टील मेहराबदार पुल है, जिसे भूकंप और हवा की स्थितियों का सामना करने के लिए डिजाइन किया गया है।

इस परियोजना में अंजी नदी पर बना भारत का पहला केबल-स्टे रेलवे पुल भी शामिल है, जिसे अंजी रेल पुल के नाम से जाना जाता है। परियोजना में 36 सुरंगें (119 किमी लंबी) और 943 पुल शामिल हैं। यूएसबीआरएल कश्मीर घाटी को हर मौसम में रेल संपर्क प्रदान करता है। यह क्षेत्र में आवागमन, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है।

तमिलनाडु में बना नया पंबन रेलवे पुल एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह नया पुल भारत का पहला वर्टिकल-लिफ्ट समुद्री पुल है। लगभग 550 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित, 2.08 किलोमीटर लंबा यह पुल 100 स्पैन से बना है, जिसमें 18.3 मीटर के 99 स्पैन और 72.5 मीटर का एक मुख्य स्पैन शामिल है।

पुल में 333 पाइल और 101 पाइल कैप से युक्त एक मजबूत सबस्ट्रक्चर सिस्टम है, जो संरचनात्मक स्थिरता प्रदान करता है। इसमें कुशल भार वितरण के लिए डिजाइन किए गए 99 एप्रोच गर्डर भी शामिल हैं। इस पुल को चुनौतीपूर्ण समुद्री परिस्थितियों और तेज तटीय हवाओं का सामना करने के लिहाज से बनाया गया है। इसकी उम्र बढ़ाने के लिए, एक संक्षारण सुरक्षा प्रणाली प्रदान की गई है, जो बिना रखरखाव के पुल के सेवा जीवन को 38 वर्षों तक और न्यूनतम रखरखाव के साथ 58 वर्षों तक बढ़ा सकती है।

यह नया पुल रामेश्वरम को रेल संपर्क सुनिश्चित करता है, जो एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल और पर्यटन केंद्र है। अपने उन्नत डिजाइन और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता को दर्शाते हुए, नए पंबन रेलवे पुल को पुल डिजाइन श्रेणी में प्रतिष्ठित स्टील स्ट्रक्चर्स एंड मेटल बिल्डिंग्स अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया है।

भारतीय रेलवे ने पूर्वोत्तर में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। कई सालों तक इस क्षेत्र को कनेक्टिविटी की गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। 2014 से पूर्वोत्तर में 1,679 किलोमीटर से अधिक रेल पटरी बिछाई गई है। 2,500 किलोमीटर से अधिक मार्ग का विद्युतीकरण किया गया है। 470 से अधिक सड़क ओवरब्रिज और अंडरब्रिज का निर्माण किया गया है। बैराबी-सैरांग नई लाइन पूरी तरह से चालू हो गई है। इससे पहली बार आइजोल रेल नेटवर्क से जुड़ गया है। आइजोल अब पूर्वोत्तर की चौथी राजधानी है, जो राष्ट्रीय रेल नेटवर्क से जुड़ चुकी है।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पूर्वोत्तर के 60 स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। सिवोक-रंगपो, दीमापुर-कोहिमा और जिरीबाम-इम्फाल जैसी प्रमुख परियोजनाएं भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। ये परियोजनाएं पूर्वोत्तर के आर्थिक और सामाजिक एकीकरण को देश के बाकी भागों से जोड़ रही हैं।

माल ढुलाई क्षेत्र में, भारतीय रेलवे समर्पित माल ढुलाई गलियारे (डीएफसी) के जरिए रसद व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। लुधियाना से सोननगर तक फैला पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (ईडीएफसी) 1,337 किलोमीटर लंबा है और पूरी तरह से चालू हो चुका है। जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह टर्मिनल को दादरी से जोड़ने वाला पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (डब्ल्यूडीएफसी) 1,506 किलोमीटर लंबा है, जिसमें से 1,404 किलोमीटर यानी 93.2% कार्य पूरा हो चुका है।

दोनों कॉरिडोर मिलकर कुल 2,843 किलोमीटर की लंबाई तय करते हैं। अब तक 2,741 किलोमीटर मार्ग चालू हो चुके हैं, जो कुल लंबाई का लगभग 96.4% है। ये समर्पित कॉरिडोर यात्री मार्गों पर भीड़भाड़ को काफी हद तक कम कर रहे हैं। इनसे यात्रा का समय कम हो रहा है, लॉजिस्टिक्स लागत घट रही है और उद्योगों और बंदरगाहों के लिए विश्वसनीयता बढ़ रही है। ये समर्पित कॉरिडोर भारत में माल ढुलाई को मजबूत कर रहे हैं और तीव्र आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रहे हैं।

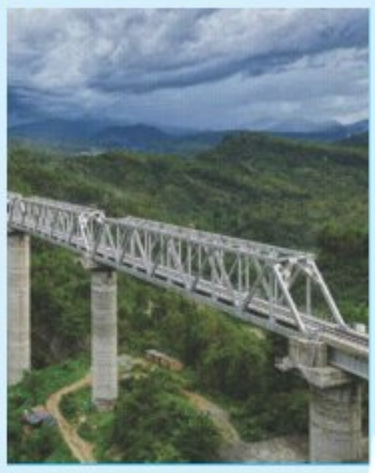

भारतीय रेलवे हाई-स्पीड रेल के क्षेत्र में भी प्रगति कर रहा है। मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना का कार्यान्वयन एनएचएसआरसीएल द्वारा किया जा रहा है। 21 दिसंबर 2025 तक, कुल 508 किमी की पटरी में से 331 किमी का वायडक्ट कार्य पूरा हो चुका है। 410 किमी के लिए पियर का कार्य पूर्ण हो चुका है। 17 नदी पुल, 5 पीएससी पुल और 11 स्टील पुल पहले ही पूरे हो चुके हैं। लगभग 272 किमी आरसी ट्रैक बेड का निर्माण हो चुका है। 4100 से अधिक ओएचई मास्ट स्थापित किए जा चुके हैं। महाराष्ट्र में प्रमुख सुरंग निर्माण कार्य प्रगति पर हैं। सूरत और अहमदाबाद में रोलिंग स्टॉक डिपो भी विकसित किए जा रहे हैं।

यह परियोजना भारत में विश्व स्तरीय हाई-स्पीड रेल प्रौद्योगिकी लाएगी। इससे दो प्रमुख आर्थिक केंद्रों के बीच यात्रा का समय काफी कम हो जाएगा।

ये ऐतिहासिक परियोजनाएं भारतीय रेलवे की राष्ट्रीय विकास में भूमिका को दर्शाती हैं। ये बड़े पैमाने पर निवेश और उन्नत इंजीनियरिंग क्षमताओं को भी प्रतिबिंबित करती हैं। इन प्रयासों के जरिए भारतीय रेलवे संपर्क में लगातार सुधार कर रहा है, आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रहा है और विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर रहा है।

उत्तर मध्य रेलवे : वर्ष 2025-सेवा, सुरक्षा और सफलता का वर्ष

सूत्र/रे.स.ब्यू- उत्तर मध्य रेलवे के लिए वर्ष 2025 ऐतिहासिक, चुनौतीपूर्ण एवं उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। इस वर्ष महाकुंभ-2025 जैसे विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों के सफल, सुरक्षित और सुगम संचालन के साथ-साथ यात्री सुविधाओं के व्यापक विस्तार, रेल अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण, नई रेल सेवाओं के शुभारंभ, परिचालन उत्कृष्टता तथा नवाचारों के माध्यम से उत्तर मध्य रेलवे ने भारतीय रेल में अपनी सशक्त पहचान और अधिक मजबूत की।

अद्भुत महाकुंभ-2025 : उत्तर मध्य रेलवे की ऐतिहासिक भूमिका

महाकुंभ-2025 के आयोजन में उत्तर मध्य रेलवे ने नोडल रेलवे (समन्वयक रेलवे) की भूमिका निभाते हुए उत्तर रेलवे एवं उत्तर पूर्व रेलवे के साथ घनिष्ठ समन्वय स्थापित किया। यात्रियों की सुविधा एवं निर्बाध आवागमन सुनिश्चित करने हेतु 494.90 करोड़ की लागत से यात्री सुविधाओं एवं अवसंरचनात्मक विकास कार्य किए गए, जबकि सड़क यातायात को सुचारु बनाए रखने के लिए आरओबी/आरयूबी (ROB/RUB) निर्माण पर 438.72 करोड़ का व्यय किया गया। महाकुंभ-2025 के दौरान यात्री सुविधाओं से जुड़े 79 कार्य पूर्ण किए गए। प्रयागराज जंक्शन सहित प्रमुख स्टेशनों पर यात्रियों की होल्डिंग क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की गई। प्रयागराज जंक्शन पर 4000 यात्रियों की क्षमता वाला नया यात्री परिसर विकसित किया गया, जिसे शौचालय, खानपान स्टॉल, उद्घोषणा प्रणाली एवं पूछताछ डिस्प्ले जैसी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया। यात्रियों की सहायता हेतु महाकुंभ रेलवे हेल्पलाइन (1800-4199-139) एवं कुंभ रेल सेवा मोबाइल ऐप का शुभारंभ किया गया, जिस पर मेले के दौरान 26,459 कॉल्स प्राप्त हुई। भीड़ प्रबंधन एवं सुरक्षा के लिए 764 नए सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए गए, जिससे 9 प्रमुख स्टेशनों पर कुल कैमरों की संख्या 1186 हो गई, जिनमें ' 116 एआई आधारित एफआरएस कैमरे शामिल थे। सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु '13,000 से अधिक रेलवे कर्मचारी तथा लगभग 10,000 जीआरपी एवं अर्धसैनिक बलों की तैनाती की गई। महाकुंभ के दौरान भारतीय रेल द्वारा कुल 17,312 ट्रेनें संचालित की गईं, जिनमें 7500 विशेष गाड़ियाँ शामिल थीं। इस अवधि में 4 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने रेल सेवाओं के माध्यम से प्रयागराज की यात्रा की। उत्तर मध्य रेलवे द्वारा 3789 महाकुंभ विशेष ट्रिप्स संचालित की गई, जो भीड़ प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुईं।

अमृत भारत स्टेशन योजना : आधुनिकता और विरासत का संगम

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत उत्तर मध्य रेलवे के करछना, गोविंदपुरी, ओरछा, पुखरायां, ईदगाह, फतेहाबाद, गोवर्धन, गोविंदगढ़ तथा मंडावर-महुवा रोड स्टेशनों का पुनर्विकास पूर्ण किया गया। इन स्टेशनों पर सर्कुलेटिंग एरिया का विकास, आधुनिक प्रवेश एवं प्रतीक्षालय, दिव्यांग-अनुकूल सुविधाएँ, उन्नत साइनेज, स्वच्छ शौचालय,

बेहतर प्रकाश व्यवस्था तथा यात्री सूचना प्रणालियाँ विकसित की गईं, जिससे यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं आधुनिक अनुभव प्राप्त हो रहा है।

वंदे भारत एवं अमृत भारत एक्सप्रेस

उत्तर मध्य रेलवे के कार्यक्षेत्र में वर्ष 2025 के दौरान खजुराहो निजामुद्दीन वंदे भारत एक्सप्रेस, बनारस खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस तथा राजेंद्र नगर टर्मिनल (पटना) नई दिल्ली , गया दिल्ली जंक्शन सहित विभिन्न अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों का शुभारंभ/ठहराव सुनिश्चित किया गया, जिससे क्षेत्रीय एवं अंतरराज्यीय संपर्क और अधिक सुदृढ़ हुआ।

रोजगार मेला

वर्ष 2025 के दौरान उत्तर मध्य रेलवे द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार मेला के अंतर्गत युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने की दिशा में प्रभावी पहल की गई। झाँसी एवं आगरा मंडल में आयोजित रोजगार मेलों के माध्यम से केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में चयनित कुल 201 नवनियुक्त अभ्यर्थियों को नियुक्ति-पत्र प्रदान किए गए, जो युवाओं को सशक्त बनाने एवं राष्ट्र निर्माण में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने की दिशा में उत्तर मध्य रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

कर्मचारी सम्मान, राजभाषा एवं सामाजिक दायित्व

उत्तर मध्य रेलवे को रेल मंत्री राजभाषा शील्ड एवं रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार समारोह-2024 में 81 रेल कर्मियों को उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

गाड़ियों के ठहराव, नई सेवाएँ एवं कोचिंग उपलब्धियाँ : यात्री सुविधा विस्तार की ठोस पहल

● वर्ष 2025 में उत्तर मध्य रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा, क्षेत्रीय संपर्क एवं बढ़ती यात्री मांग को ध्यान में रखते हुए नई रेल सेवाओं का शुभारंभ, गाड़ियों का विस्तार, फ्रीक्वेंसी में वृद्धि, स्थायी कोच वृद्धि तथा व्यापक स्तर पर ठहराव सुविधाएँ प्रदान की गईं।

● इस अवधि में 2 नई रेल सेवाएँ प्रारंभ की गईं, जिनमें ग्वालियर एस.एम.वी.टी. बेंगलुरु साप्ताहिक एक्सप्रेस (11085/11086) प्रमुख रही। इसके अतिरिक्त 2 गाड़ियों का विस्तार कर झाँसी प्रयागराज एक्सप्रेस (11801/11802) को ग्वालियर तक संचालित किया गया। यात्रियों की बढ़ती मांग को देखते हुए ग्वालियर भोपाल सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12197/12198) की फ्रीक्वेंसी 5 दिन से बढ़ाकर दैनिक की गई।

● यात्री सुविधा सुदृढ़ीकरण के अंतर्गत 20 गाड़ियों में स्थायी कोच वृद्धि (Permanent Augmentation) की गई, जिनमें जनरल सेकंड क्लास, वातानुकूलित एवं स्लीपर श्रेणी के कोच शामिल हैं, जिससे भीड़ नियंत्रण एवं यात्रा आराम में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

● इसके साथ ही वर्ष 2025 के दौरान उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज, झाँसी एवं आगरा मंडलों में कुल 41 गाड़ियों को विभिन्न स्टेशनों पर अस्थायी/प्रायोगिक ठहराव प्रदान किए गए। इन ठहरावों के अंतर्गत रामगढ़, अलीगढ़, दतिया, ओरछा, बानमोर, उरई, खुसरोबाग, करछना, शिवालय टेहू, चोला, फिरोजाबाद, हाथरस, फफूंद सहित अनेक स्टेशनों को जोड़ा गया, जिससे स्थानीय यात्रियों, तीर्थयात्रियों एवं दैनिक आवागमन करने वाले यात्रियों को सीधा लाभ प्राप्त हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

भारत में निर्मित (मेड-इन-इंडिया) ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम कवच 4.0 का गुजरात के बाजवा (वडोदरा) - अहमदाबाद सेक्शन में शुभारंभ

कवच के तहत 2,200 से ज़्यादा रूट किलोमीटर कवर किए गए

सूत्र/रे.स.ब्यू- कवच के विस्तार की कड़ी में, अब गुजरात के पहले बाजवा (वडोदरा)-अहमदाबाद सेक्शन (96 किमी) में कवच 4.0 को सफलतापूर्वक शुरू कर दिया गया है। इस परियोजना के दायरे में 17 स्टेशन आते हैं और इसमें सुरक्षा का एक मजबूत ढांचा तैयार किया गया है, जिसमें 23 टावर, 20 कवच भवन/हट, 192 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल और 2,872 आरएफआईडी टैग्स शामिल है।

इस मार्ग पर कवच प्रणाली से लैस पहली ट्रेन संकल्प फास्ट पैसेंजर (59549/59550) थी। इसका संचालन डब्ल्यूएपी-7 लोको-मोटिव (इंजन) और 11 एलएचबी कोचों के साथ किया गया।

इस रेल खंड सेक्शन पर अब कवच 4.0 पूरी तरह कार्यात्मक है। इसे सुरक्षा जोखिमों को स्वतः कम करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो सिग्नल पास्ड एट डेंजर (एसपीएडी) जैसी स्थितियों के परिणामों को रोकता है। यह सिस्टम सेक्शनल स्पीड, लूप लाइन और स्थायी गति प्रतिबंधों (पीएसआर) की निगरानी करते हुए स्वचालित गति नियंत्रण सुनिश्चित करता है। साथ ही, यह ट्रेनों की आमने-सामने और पीछे से होने वाली टक्करों से सुरक्षा प्रदान करता है। इसकी अतिरिक्त सुरक्षा सुविधाओं में आपातकालीन एसओएस सुविधा और लेवल क्रॉसिंग गेटों पर स्वचालित व्हिसलिंग शामिल है।

अब तक, 2,200 मार्ग किलोमीटर से अधिक के रेल नेटवर्क पर कवच प्रणाली को लागू किया जा चुका है।

कवच भारतीय रेलवे द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित एक स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन) प्रणाली है, जिसे ऑपरेशनल सेफ्टी का उच्चतम स्तर प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह एक अत्यधिक टेक्नोल जी-इंटेंसिव सिस्टम है जिसे सेफ्टी इंटीग्रिटी लेवल-4 (एसआईएल-4) प्रमाणित किया गया है। यह सिग्नलिंग प्रणालियों में उच्चतम सुरक्षा मानकों में से एक है, जो विश्व स्तरीय सुरक्षा और विश्वसनीयता के प्रति भारतीय रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

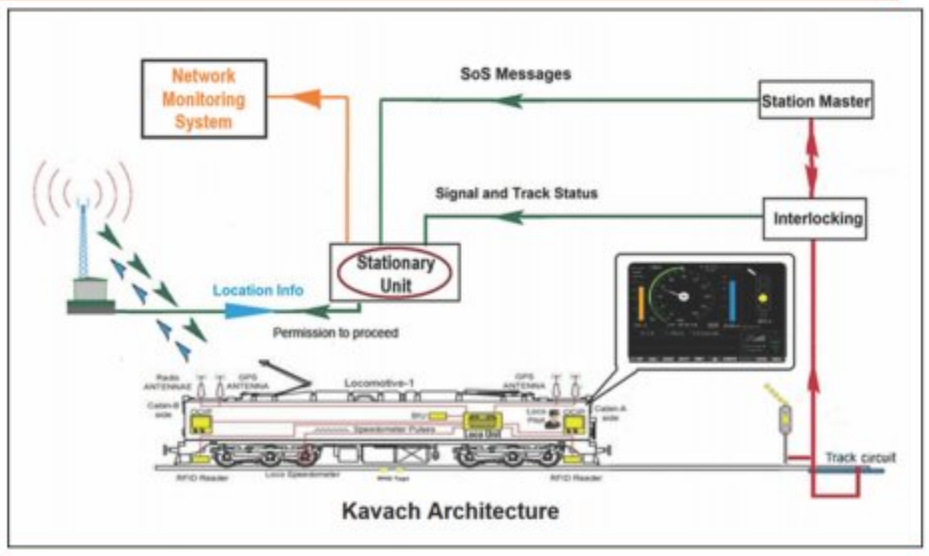

Kavach Architecture

कवच 4.0 एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि है। इन मुख्य सुधारों में शामिल हैं:

- बेहतर लोकेशन सटीकता, जिससे ट्रेन की सटीक स्थिति का पता लगाना संभव हो पाता है।
- बड़े और जटिल स्टेशन यार्डों में सिग्नल की स्थिति की अधिक स्पष्ट और सटीक जानकारी प्रदान करना।
- ऑप्टिकल फाइबर केबल के माध्यम से स्टेशन–टू–स्टेशन कवच इंटरफेस, जो अधिक तेज और विश्वसनीय संचार सुनिश्चित करता है।
- मौजूदा इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम के साथ सीधा इंटीग्रेशन, जिससे वर्तमान सिग्नलिंग बुनियादी ढांचे के साथ निर्बाध समन्वय सुनिश्चित होता है।

कवच, निर्धारित गति सीमा से अधिक होने या सुरक्षा खतरा होने की स्थिति में स्वचालित रूप से ब्रेक लगाकर लोको पायलटों की सहायता करता है। इस प्रकार, यह दुर्घटनाओं को रोकने और खराब मौसम की स्थिति में भी सुरक्षित ट्रेन परिचालन को बढ़ावा देने में मदद करता है। ऑपरेशनल अनुभव और स्वतंत्र सुरक्षा आकलनों के आधार पर किए गए निरंतर सुधारों के फलस्वरूप आरडीएसओ द्वारा कवच वर्जन 4.0 को मंजूरी दी गई। कवच 4.0 रेलवे सुरक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और इसे भारत के विविध और हाई-डेंसिटी वाले रेल नेटवर्क की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

ये अपग्रेड कवच 4.0 को और अधिक मजबूत, रिस्पॉन्सिव और भारत के विविध एवं हाई-डेंसिटी वाले रेल नेटवर्क पर बड़े पैमाने पर लागू करने के लिए उपयुक्त बनाते हैं। साथ ही, इस प्रणाली को इंडिपेंडेंट सेफ्टी असेसर (आईएसए) द्वारा वैश्विक सुरक्षा मानकों को पूरा करने के लिए प्रमाणित भी किया गया है। गुजरात के बाजवा (वडोदरा) अहमदाबाद सेक्शन पर कवच 4.0 की शुरुआत, स्वदेशी सुरक्षा तकनीकों को लागू करने के प्रति भारतीय रेलवे के निरंतर संकल्प को सुदृढ़ करता है। यह कदम यात्री सुरक्षा को मजबूत करने, परिचालन विश्वसनीयता में सुधार लाने और देश के लिए एक सुरक्षित तथा स्मार्ट रेल नेटवर्क के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन ने कोटा-नागदा खंड पर 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से सीआरएस हाई-स्पीड ट्रायल सफलतापूर्वक पूरा किया

सूत्र/रे.स.ब्यू- भारतीय रेलवे ने स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का अंतिम उच्च गति परीक्षण रेल सुरक्षा आयुक्त (सीआरएस) की देखरेख में सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह परीक्षण कोटा-नागदा खंड पर किया गया और इस दौरान ट्रेन ने 180 किमी प्रति घंटे की अधिकतम गति प्राप्त की, जो उन्नत और आत्मनिर्भर रेल प्रौद्योगिकी की दिशा में भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

परीक्षण के दौरान, व्यापक तकनीकी मूल्यांकन किए गए, जिनमें यात्रा स्थिरता, कंपन व्यवहार, ब्रेकिंग प्रणाली का प्रदर्शन, आपातकालीन ब्रेकिंग प्रणाली, सुरक्षा प्रणाली और अन्य अहम मापदंड शामिल थे। उच्च गति पर ट्रेन का प्रदर्शन पूरी तरह संतोषजनक पाया गया और सीआरएस द्वारा परीक्षण को सफल घोषित किया गया।

रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने सोशल मीडिया पर हाई-स्पीड ट्रायल का एक वीडियो साझा किया, जिसमें कोटा-नागदा खंड पर 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से वंदे भारत स्लीपर ट्रेन के सफल सीआरएस ट्रायल को दिखाया गया है। वीडियो में पानी से भरे गिलासों की स्थिरता का प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें पानी से भरे ये गिलास तेज रफ्तार होने के बावजूद बिना छलके स्थिर रहे। यह इस नई पीढ़ी की ट्रेन की उन्नत सवारी गुणवत्ता, बेहतर सस्पेंशन और तकनीकी मजबूती को दर्शाता है।

परीक्षण में इस्तेमाल की गई 16 कोच वाली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन, लंबी दूरी की यात्रा में जाने वाले मुसाफिरों को ध्यान में रखकर बनाई गई है और इसमें अत्याधुनिक यात्री सुविधाएं मौजूद हैं। इनमें आरामदायक स्लीपर बर्थ, उन्नत सस्पेंशन सिस्टम, स्वचालित दरवाजे, आधुनिक शौचालय, अग्नि सुरक्षा और निगरानी प्रणाली, सीसीटीवी आधारित निगरानी, डिजिटल यात्री सूचना प्रणाली और ऊर्जा-कुशल तकनीकें शामिल हैं। इन सुविधाओं का मकसद यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक और विश्व स्तरीय यात्रा का अनुभव प्रदान करना है।

सीआरएस हाई-स्पीड ट्रायल का सफल समापन एक अहम तकनीकी उपलब्धि है और इसके साथ ही वंदे भारत स्लीपर सेवाओं की शुरुआत के लिए रास्ता साफ हो गया है। यह विकास आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के तहत नवाचार, सुरक्षा और स्वदेशी रेल निर्माण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों में मौजूद व्यापक तकनीकी प्रगति और सुरक्षा सुविधाएं

- कवच से सुसज्जित
- दुर्घटना–प्रतिरोधी और झटके–रहित अर्ध–स्थायी कपलर और एंटी–क्लाइम्बर
- प्रत्येक कोच के अंत में अग्निरोधक द्वार
- विद्युत कैबिनेट और शौचालयों में बेहतर अग्नि सुरक्षा के लिए एरोसोल आधारित अग्नि पहचान और शमन प्रणाली
- ऊर्जा दक्षता के लिए रीजेनरेटिव ब्रेकिंग प्रणाली
- स्वदेशी रूप से विकसित यूवी–सी लैंप आधारित कीटाणुशोधन प्रणाली से सुसज्जित एयर कंडीशनिंग इकाइयां
- केंद्रीय रूप से नियंत्रित स्वचालित प्लग द्वार और पूरी तरह से सीलबंद चौड़े गलियारे
  सभी कोचों में सीसीटीवी
- आपात स्थिति में यात्री और ट्रेन प्रबंधक/लोको पायलट के बीच संचार के लिए आपातकालीन टॉक–बैक यूनिट
- दिव्यांगजन यात्रियों के लिए प्रत्येक छोर पर ड्राइविंग कोचों में विशेष शौचालय
- एयर कंडीशनिंग, सैलून लाइटिंग आदि जैसी यात्री सुविधाओं की बेहतर स्थिति निगरानी के लिए केंद्रीकृत कोच निगरानी प्रणाली
- ऊपरी बर्थ पर चढ़ने में आसानी के लिए एर्गोनॉमिक रूप से डिज़ाइन की गई सीढ़ी

निर्यात कार्गो एक्सप्रेस इच्छापुरी, गुरुग्राम से मुंद्रा पोर्ट तक चलाई जा रही है

सूत्र/रे.स.ब्यू- रेलवे, माल ढुलाई में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए निर्यात केंद्रित, सुनिश्चित ढुलाई सेवा, निर्यात कार्गो एक्सप्रेस गुरुग्राम के इच्छापुरी कंटेनर टर्मिनल से मुंद्रा बंदरगाह तक डबल-स्टैक कंटेनर ट्रेन के रूप में संचालित कर रही है। इससे पहले गुरुग्राम के गढ़ी से सुनिश्चित माल ढुलाई सेवा की 20 खेप संचालित हुई है। समय सारणीबद्ध रेल ढुलाई सेवा गुरुग्राम के इच्छापुरी से पहली बार संचालित की जा रही है।

मुंद्रा बंदरगाह तक सुनिश्चित और समयबद्ध यह साप्ताहिक सेवा, माल की तेज, विश्वसनीय और अनुमानित समय में ढुलाई करेगी और निर्यातकों के लिए सहायक होगी, जिससे माल पहुंचने में विलंब और प्रचालन लागत में कमी आएगी।

उत्तर रेलवे का दिल्ली मंडल निर्यातकों के लिए सुनिश्चित माल ढुलाई सेवा संचालित कर रहा है। विशेष रूप से संचालित इस मालगाड़ी से न्यूनतम ठहराव, निर्बाध आवागमन, माल की तेज ढुलाई समय पर हो रही है। यह उच्च मूल्य निर्यात कार्गो के लिए विशेष रूप से बहुत उपयोगी है।

डिजिटल इंडिया को गति: रेलवे के 6,117 स्टेशनों पर मुफ्त वाई-फाई सुविधा

सुरक्षित यात्रा के लिए 1,731 स्टेशनों और 11,953 कोचों में सीसीटीवी निगरानी प्रणाली

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सुरक्षा बढ़ाने के लिए 250 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं

सूत्र/रे.स.ब्यू- केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि रेलवे के 6117 रेलवे स्टेशनों पर मुफ्त वाई-फाई सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। रेल मंत्रालय को इन वाई-फाई सेवाओं के लिए अलग से धनराशि स्वीकृत नहीं की गई है।

रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध वाई-फाई सेवा का उपयोग करने के लिए ओटीपी के लिए मोबाइल नंबर के अलावा कोई भी व्यक्तिगत जानकारी नहीं मांगी जाती है। स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा से संबंधित समस्या होने पर रेलवे प्रशासन द्वारा तुरंत उचित कार्रवाई की जाती है।

स्टेशनों और डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाने की प्रक्रिया जारी है। अब तक, रेल यात्रियों की सुरक्षित यात्रा के लिए 1731 स्टेशनों और 11,953 डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। सीसीटीवी निगरानी प्रणाली का खर्च पूंजीगत व्यय के अंतर्गत आता है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्रवेश/निकास द्वार, फुट ओवर ब्रिज, प्लेटफार्म जैसे बाहरी क्षेत्रों और प्रतीक्षा कक्ष, टिकट काउंटर जैसे आंतरिक क्षेत्रों में पहले से ही सीसीटीवी कैमरे लगे हुए थे। हालांकि, 15 फरवरी, 2025 के बाद नई दिल्ली स्टेशन परिसर में कुछ नए क्षेत्रों के लिए अतिरिक्त सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। वर्तमान में, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 250 सीसीटीवी कैमरे हैं।

भारतीय रेलवे ने 2025 में त्योहारों और यात्राओं के दौरान सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए 43,000 से अधिक विशेष ट्रेन यात्राएं संचालित कीं

महा कुंभ के लिए 17,340, होली के लिए 1,144, गर्मियों की छुट्टियों के दौरान 12,417 और छठ पूजा के लिए 12,383 विशेष रेल यात्राएं संचालित की गई

सूत्र/रे.स.ब्यू- भारतीय रेलवे ने प्रमुख धार्मिक आयोजनों और यात्राओं के पीक सीजन के दौरान बड़ी संख्या में विशेष ट्रेन सेवाएँ संचालित कर यात्रियों की सुगम, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए व्यापक कदम उठाए। ये पहल बढ़ती यात्री मांग को पूरा करने और देशभर में निर्बाध संपर्क उपलब्ध कराने के प्रति रेलवे की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। वर्ष 2025 में विशेष ट्रेन परिचालन को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया गया, जो बेहतर योजना और यात्रियों की सुविधा पर पहले से अधिक मजबूत फोकस को रेखांकित करता है।

वर्ष 2025 के दौरान भारतीय रेलवे ने महा कुंभ के लिए अपने सबसे बड़े विशेष ट्रेन अभियानों में से एक का संचालन किया। 13 जनवरी से 28 फरवरी 2025 के बीच तीर्थयात्रियों की अत्यधिक संख्या की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए 17,340 विशेष ट्रेन यात्राएँ संचालित की गईं। इसी तरह, होली 2025 के अवसर पर 1 मार्च से 22 मार्च 2025 के बीच 1,144 विशेष ट्रेन यात्राएँ संचालित की गईं, जो होली 2024 की तुलना में लगभग दोगुनी थीं। इससे यात्रियों को बेहतर उपलब्धता मिली और त्योहार के दौरान यात्रा अधिक सहज और सुव्यवस्थित रही।

समर ट्रैवल सीजन, 2025 यानि गर्मी की छुट्टियों के दौरान, जो 1 अप्रैल से 30 जून तक रहा, यात्रियों की बढ़ी हुई आवाजाही को ध्यान में रखते हुए 12,417 समर स्पेशल ट्रेन यात्राओं का संचालन किया गया, जिससे छुट्टियों के पीक महीनों में भी उच्च स्तर की सेवा बनाए रखी जा सकी। इसके अलावा, छठ पूजा 2025 के लिए विशेष इंतजामों को और मजबूत किया गया। 1 अक्टूबर से 30 नवंबर 2025 के बीच 12,383 विशेष ट्रेन यात्राएँ चलाई गईं, जो पिछले वर्ष की तुलना में एक उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है।

साल 2025 में किए गए ये विस्तारित इंतजाम 2024 में तैयार किए गए मजबूत परिचालन आधार पर आधारित थे। 30 जनवरी से 11 मार्च 2024 के बीच संचालित आस्था स्पेशल सेवाओं के दौरान तीर्थयात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए 326 विशेष सर्कुलर ट्रेन यात्राएँ चलाई गई थीं। इसी तरह, होली 2024 के अवसर पर 12 मार्च से 2 अप्रैल 2024 के बीच त्योहारों के दौरान बढ़ने वाली भीड़ को संभालने के लिए भारतीय रेलवे ने 604 विशेष ट्रेन यात्राओं का संचालन किया था।

गर्मियों की छुट्टियों 2024 के दौरान 12,919 समर स्पेशल ट्रेन यात्राएँ संचालित की गई थीं। वहीं, छठ पूजा 2024 के लिए 1 अक्टूबर से 31 दिसंबर 2024 के बीच 7,990 विशेष ट्रेन यात्राओं का संचालन किया गया था।

वर्ष 2025 में विशेष ट्रेन परिचालन में हुई उल्लेखनीय वृद्धि यह दर्शाती है कि भारतीय रेलवे यात्रियों की सुविधा, प्रभावी भीड़ प्रबंधन और अधिक मांग वाले समय में विश्वसनीय तथा सुचारु यात्रा व्यवस्था सुनिश्चित करने के प्रति लगातार प्रतिबद्ध है।

समस्त प्रकार के कानूनी मामलों का न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
ज्ञानेन्द्र कुमार श्रीवास्तव दि.
इलाहाबाद ब्लॉक वर्क्स प्रा. लि.
329/255 चक. जीरो रोड इलाहाबाद से मुद्रित एवं 502 पंचशीला भवन त्रिवेनी रोड, नेतानगर, कीडगंज प्रयागराज-211003 से प्रकाशित।
आर.एन. आई नं. 51097-90 पोस्ट ए.डी.-8
मो. 9773946044 / 9793956044
फोन नं. 0532-2418040

पाठकों से अनुरोध

विगत वर्षों की भाँति आगामी वर्ष के लिए अपनी रेल समाचार ब्यूरो पत्रिका को सुरक्षित करने के लिए वार्षिक सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजने की कृपा करें, जिससे उक्त पत्रिका आपको नियमित भेजी जा सके।

सहयोग राशि:

१. उच्चतम अधिकारी-5000 रु. मात्र
२. उच्च अधिकारी- 3500 रु. मात्र
३. अधीनस्थ अधिकारी-2500 रु. मात्र
४. रेलकर्मी/अन्य सदस्य-1000 रु. मात्र

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
ज्ञानेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
पंजिकृत कार्यालय
502 पंचशीला भवन त्रिवेनी रोड, नेतानगर, कीडगंज प्रयागराज-211003 से प्रकाशित।
कैंप कार्यालय- अनिल केन (रिपोर्टर)
कार्यालय 8439 आर्य नगर
पहाड़गंज दिल्ली-55

Scanned with OKEN Scanner

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के दूसरे पारंपरिक चिकित्सा वैश्विक शिखर सम्मेलन के समापन समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वास्थ्य और कल्याण में संतुलन बनाए रखने के लिए वैश्विक स्तर पर त्वरित कार्रवाई का आह्वान किया

सूत्र/रे.स.ब्यू- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के दूसरे वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा शिखर सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित किया। उन्होंने वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों के साक्ष्य-आधारित, एकीकृत और जन-केंद्रित घटक के रूप में पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने में भारत के बढ़ते नेतृत्व पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने शिखर सम्मेलन को अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक सशक्त मंच बताया, जहां विश्व भर के नेताओं, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों के बीच गंभीर और रचनात्मक विचार-विमर्श हुए।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर गर्व किया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र गुजरात के जामनगर में स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा कि 2022 में वैश्विक समुदाय द्वारा भारत को यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी। यह केंद्र तेजी से सहयोग, अनुसंधान, विनियमन और क्षमता निर्माण के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभरा है, जो भारत के नेतृत्व में बढ़ते अंतरराष्ट्रीय विश्वास को दर्शाता है। श्री मोदी ने पारंपरिक चिकित्सा में वैश्विक साझेदारी को मजबूत करने के लिए एक सहयोगी मंच के रूप में कार्य करने की भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया।

प्रधानमंत्री ने शिखर सम्मेलन के विषय, "संतुलन की बहाली: स्वास्थ्य और कल्याण का विज्ञान और अभ्यास" पर जोर देते हुए कहा कि आयुर्वेद में वर्णित समग्र स्वास्थ्य का आधार संतुलन है। उन्होंने बताया कि जीवनशैली संबंधी विकारों से लेकर दीर्घकालिक रोगों तक, कई आधुनिक स्वास्थ्य समस्याएं असंतुलन के विभिन्न रूपों में निहित हैं, और संतुलन की बहाली न केवल एक वैश्विक मुद्दा बल्कि एक वैश्विक आवश्यकता बन गई है। उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के लिए, विशेष रूप से तकनीकी परिवर्तन से प्रेरित तेजी से बदलती जीवनशैली के मद्देनजर, त्वरित और समन्वित कार्रवाई का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास और विश्वसनीयता स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि पारंपरिक चिकित्सा को वैज्ञानिक मान्यता, वैश्विक स्तर पर स्वीकृत नियामक मानकों और डिजिटल नवाचार द्वारा समर्थित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज शुरू की गई पारंपरिक चिकित्सा वैश्विक पुस्तकालय जैसी पहल वैज्ञानिक आंकड़ों और नीतिगत संसाधनों तक समान वैश्विक पहुंच सुनिश्चित करेगी। वैश्विक जन स्वास्थ्य के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से विश्वास, सम्मान और साझा जिम्मेदारी के साथ पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री ने परंपरागत चिकित्सा की सुरक्षा और प्रमाणिक आधार को लेकर प्रायः व्यक्त की जाने वाली चिंताओं का जिक्र करते हुए कहा कि भारत अनुसंधान और प्रमाणीकरण के माध्यम से इन मुद्दों को हल करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने अश्वगंधा का उदाहरण देते हुए कहा कि यह एक ऐसा जड़ी-बूटी है जिसकी समय-समय पर उपयोगिता सिद्ध हुई है और जिसने विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत परंपरागत चिकित्सा को आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के साथ एकीकृत करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें कैंसर के एकीकृत उपचार को मजबूत करने और प्रमाणिक दिशा-निर्देश विकसित करने की पहल शामिल है। इस प्रकार, परंपरागत चिकित्सा की भूमिका को स्वास्थ्य से परे सार्वजनिक स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण क्षेत्रों तक विस्तारित किया जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस अधानोम घेब्रेयसस ने वैश्विक स्तर पर पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सराहना की। उन्होंने भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान वैश्विक सहयोग के लिए प्रधानमंत्री के आह्वान को याद किया और कहा कि इससे अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया मिली। डॉ. टेड्रोस ने कहा कि प्रधानमंत्री का 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' का दृष्टिकोण पारंपरिक चिकित्सा के मूल सिद्धांतों के बहुत करीब है, जो संतुलन, रोकथाम और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर देता है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जेपी नड्डा ने पारंपरिक चिकित्सा को निरंतर बढ़ावा देने और इसे एक विश्वसनीय एवं विश्व स्तर पर स्वीकृत स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री के दूरदर्शी

नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने वैज्ञानिक, साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोणों के माध्यम से आयुष को आगे बढ़ाने और निवारक, प्रोत्साहक और समग्र स्वास्थ्य देखभाल को मजबूत करने के लिए इसे आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर बल दिया।

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रतापराव जाधव ने वैश्विक नेताओं, विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधियों, विशेषज्ञों, उद्योग जगत के हितधारकों और सदस्य देशों की सक्रिय भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शिखर सम्मेलन वैश्विक स्वास्थ्य चर्चा में एक निर्णायक बदलाव लाया है, जिससे पारंपरिक चिकित्सा को जन-केंद्रित, निवारक और समग्र स्वास्थ्य देखभाल के एक आवश्यक स्तंभ के रूप में मजबूती से स्थापित किया गया है।

श्री जाधव ने भारत के नेतृत्व का उल्लेख करते हुए जामनगर स्थित डब्ल्यूएचओ-ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन को वैश्विक सहयोग, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समग्र जीवनशैली पर आधारित आयुष प्रणालियों को वैज्ञानिक मान्यता, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से लगातार समर्थन मिल रहा है। एकीकृत स्वास्थ्य सेवा को भविष्य बताते हुए उन्होंने सदस्य देशों से डब्ल्यूएचओ के साथ साझेदारी में शिखर सम्मेलन के परिणामों को ठोस राष्ट्रीय कार्यों में परिणत करने का आग्रह किया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक ने संयुक्त रूप से नई दिल्ली में डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्रीय कार्यालय भवन का उद्घाटन किया जिसमें डब्ल्यूएचओ का भारत स्थित कार्यालय भी होगा। इस नए परिसर को दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने, नियामक सहयोग को मजबूत करने और क्षमता निर्माण के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में परिकल्पित किया गया है जिससे विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ भारत की साझेदारी और भी गहरी होगी।

प्रधानमंत्री ने पारंपरिक चिकित्सा वैश्विक पुस्तकालय का भी शुभारंभ किया जो पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित वैज्ञानिक आंकड़ों, नीतिगत दस्तावेजों और प्रमाणित ज्ञान को संरक्षित करने और सभी के लिए समान पहुंच प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया एक महत्वपूर्ण वैश्विक मंच है। उन्होंने पारंपरिक चिकित्सा खोज स्थल का भी दौरा किया जो भारत और विश्व भर की पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान प्रणालियों की विविधता, गहराई और समकालीन प्रासंगिकता को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी है। इसमें प्राचीन ज्ञान और आधुनिक नवाचार के संगम को उजागर किया गया है।

श्री मोदी ने योग के प्रचार-प्रसार और विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार प्रदान किए जिसमें अनुकरणीय सेवा के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तियों और संगठनों को सम्मानित किया गया। उन्होंने आयुष क्षेत्र में भारत के नेतृत्व को रेखांकित करते हुए प्रमुख आयुष पहलों का शुभारंभ किया, जिनमें आयुष ग्रिड के प्रमुख डिजिटल पोर्टल के रूप में माई आयुष इंटीग्रेटेड सर्विसेज पोर्टल (एमएआईएसपी), गुणवत्तापूर्ण आयुष उत्पादों और सेवाओं के लिए वैश्विक मानक के रूप में परिकल्पित आयुष मार्क, अश्वगंधा पर एक स्मारक डाक टिकट का विमोचन, योग प्रशिक्षण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की तकनीकी रिपोर्ट और ''जड़ों से वैश्विक पहुंच तकः आयुष में परिवर्तन के 11 वर्ष'' नामक पुस्तक का विमोचन शामिल हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के दूसरे वैश्विक परंपरागत चिकित्सा शिखर सम्मेलन का समापन दिल्ली घोषणापत्र को अपनाने के साथ हुआ, जिसमें परंपरागत चिकित्सा को एक साझा जैव-सांस्कृतिक विरासत के रूप में पुनः स्थापित किया गया और सदस्य देशों ने डब्ल्यूएचओ की वैश्विक परंपरागत चिकित्सा रणनीति 2025-2034 के अनुरूप साक्ष्य, विनियमन, एकीकरण और अंतर-क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। शिखर सम्मेलन ने संवाद से कार्रवाई की ओर एक स्पष्ट बदलाव को चिह्नित किया है। इससे भारत के नेतृत्व और सभी के लिए सुरक्षित, प्रभावी, न्यायसंगत और सतत स्वास्थ्य सेवा के प्रति साझा वैश्विक प्रतिबद्धता को बल मिला।

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) ने विश्व ध्यान दिवस मनाया और तनाव प्रबंधन में ध्यान की वैज्ञानिक भूमिका पर प्रकाश डाला

एमडीएनआईवाई के विशेषज्ञों के अनुसार, ध्यान तनाव प्रबंधन और न्यूरोप्लास्टिसिटी के लिए एक वैज्ञानिक उपकरण है

सूत्र/रे.स.ब्यू- आयुष मंत्रालय के अंतर्गत मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) ने विश्व ध्यान दिवस मनाया। इस अवसर पर विशेष ध्यान सत्रों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात विद्वान, योग करने वाले और उत्साही लोग एक साथ आए। इस आयोजन ने बढ़ते वैश्विक तनाव के बोझ से निपटने में प्राचीन योगिक ज्ञान और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के संगम को रेखांकित किया।

एमडीएनआईवाई के निदेशक प्रो. (डॉ.) काशीनाथ समागंडी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए प्रतिस्पर्धी विश्व में ध्यान के नैदानिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि लगभग 60 से 70 प्रतिशत तनाव व्यावसायिक प्रकृति का होता है और पतंजलि योगसूत्र में वर्णित तकनीकों के माध्यम से शरीर और मन को संतुलित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। समकालीन शोध का हवाला देते हुए उन्होंने समझाया कि न्यूरोइमेजिंग अध्ययनों से पता चलता है कि ओम का जाप करने से एमिग्डाला - मस्तिष्क का भय और नकारात्मक भावनाओं का केंद्र- की गतिविधि कम हो जाती है, क्योंकि यह प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स को सक्रिय करता है जो भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है। एक एफएमआरआई अध्ययन ने विश्राम अवस्था की तुलना में तेज आवाज में ओम का जाप करने के दौरान एमिग्डाला की महत्वपूर्ण निष्क्रियता को प्रदर्शित किया है। उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआई- एमएस), नई दिल्ली के निष्कर्षों का भी हवाला दिया जो यह दर्शाते हैं कि योग निद्रा से मस्तिष्क की क्रिया में परिवर्तन होते हैं जो गहन विश्राम और भावनात्मक विनियमन से जुड़े होते हैं जिससे तनाव कम होता है।

ध्यान की आध्यात्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए, नई दिल्ली के रामकृष्ण मिशन के स्वामी मुक्तिमयानंद ने प्रतिभागियों को स्थायी शांति के लिए अंतर्मुखी होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानसिक उतार-चढ़ाव को शांत करने की शुरुआत आत्म-समझ और अपने सच्चे स्वरूप - सत चित आनंद स्वरूप - की पहचान से होती है, जो प्रेम और करुणा पर आधारित है। उन्होंने अहंकार, ईर्ष्या और अधूरी इच्छाओं पर काबू पाने के लिए यम और नियम का पालन करने पर भी बल दिया जो आंतरिक सामंजस्य को भंग करते हैं।

इस कार्यक्रम में विभिन्न ध्यान तकनीकों का व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों को मानसिक और भावनात्मक लचीलेपन को बढ़ाने के लिए प्रभावी उपकरण प्रदान करना था। कार्यक्रम का समापन ''स्वस्थ मन, स्वस्थ भारत'' के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जीवन में ध्यान को शामिल करने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

इस कार्यक्रम में विश्वास मेडिटेशन, नई दिल्ली के श्री अतुल चावला, एमडीएनआईवाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आई.एन. आचार्य और एमडीएनआईवाई के संचार एवं प्रलेखन अधिकारी मोहम्मद तैयब आलम उपस्थित थे। कार्यक्रम में योगाभ्यास करने वालों, छात्रों, संकाय सदस्यों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों सहित लगभग 700 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पिछले वर्ष 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस घोषित किया था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का आनंद लेने के अधिकार की पुष्टि की गई थी। यह पहल आयुष मंत्रालय के उन निरंतर प्रयासों के अनुरूप है, जिनका उद्देश्य स्वस्थ समाज के लिए पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक जीवनशैली के साथ एकीकृत करना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुष मंत्रालय ने नई दिल्ली में आयुष प्रणालियों को वैश्विक स्वास्थ्य हस्तक्षेप मानकों में एकीकृत करने के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी बैठक आयोजित की

सूत्र/रे.स.ब्यू- पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल के वैश्विक एकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 20-21 दिसंबर, 2025 को नई दिल्ली के होटल इंपीरियल में पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) हस्तक्षेप कोड सेट विकास पर दो दिवसीय तकनीकी परियोजना बैठक का आयोजन किया। यह पहल मूल रूप से आयुष मंत्रालय और डब्ल्यूएचओ के बीच 24 मई, 2025 को हस्ताक्षरित ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) और दाता समझौते से प्रेरित है। यह समझौता अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य हस्तक्षेप वर्गीकरण (आईसीएचआई) के अंतर्गत पारंपरिक चिकित्सा के लिए एक समर्पित मॉड्यूल विकसित करने की आधारशिला है। आईसीएचआई स्वास्थ्य हस्तक्षेपों के वर्गीकरण हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक मानक है। इस पहल के अंतर्गत भारत आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी (एएसयू) प्रणालियों को वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए आवश्यक वित्तीय और तकनीकी ढांचे उपलब्ध करा रहा है।

इस बैठक का आयोजन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उस विजन के अनुरूप है, जिसमें उन्होंने कहा कि ऐसी पहलें आयुष प्रणालियों को वैज्ञानिक तरीके से वैश्विक स्तर पर अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में सहायक होती हैं। अपने 'मन की बात' संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि यह मानकीकृत ढांचा आयुष प्रणालियों को वैश्विक मान्यता और वैज्ञानिक विश्वसनीयता प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने भी पूर्व में कहा था कि एक समर्पित आईसीएचआई मॉड्यूल आयुष प्रणालियों की वैश्विक मान्यता को सुगम बनाएगा और समावेशी, सुरक्षित और साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य सेवा के लिए डब्ल्यूएचओ के प्रयासों का समर्थन करेगा।

तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता आयुष मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री कविता गर्ग ने की, जिन्होंने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य हस्तक्षेप कोड को विकसित करने में भारतीय टीम की अगुवाई की। उनके नेतृत्व में विशेषज्ञों की एक प्रतिष्ठित टीम ने इस पहल में योगदान दिया, जिनमें सीसीआरएएस के महानिदेशक प्रो. रबीनारायण आचार्य, सीसीआरएएस के महानिदेशक प्रो. एन.जे. मुथुकुमार और सीसीआरयूएम के महानिदेशक डॉ. जहीर अहमद भी शामिल हैं।

इस बैठक में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सभी छह क्षेत्रों - जिनमें एएफआरओ, एएमआरओ, ईएमआरओ, ईयूआरओ, एसईएआरओ, डब्ल्यूपीआरओ से व्यापक भागीदारी देखने को मिली, जिससे पारंपरिक चिकित्सा पर एक व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण सुनिश्चित हुआ। जेनेवा स्थित डब्ल्यूएचओ मुख्यालय के प्रमुख प्रतिनिधियों, जैसे रॉबर्ट जेकब, नेनाद कोस्टांजेक, स्टीफन एस्पिनोसा और डॉ. प्रदीप दुआ ने वर्गीकरण संबंधी चर्चाओं का नेतृत्व किया। उनके साथ जामनगर स्थित डब्ल्यूएचओ वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (जीटीएमसी) से डॉ. गीता कृष्णन और दिल्ली स्थित डब्ल्यूएचओ एसईएआरओ कार्यालय से डॉ. पवन कुमार गोदातवार भी शामिल हुए। भूटान, ब्राजील, भारत, ईरान, मलेशिया, नेपाल, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, फिलीपींस, ब्रिटेन और अमरीका सहित सदस्य देशों ने अपने-अपने देश की स्थिति का मूल्यांकन करने और हस्तक्षेप विवरणों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए भाग लिया।

Scanned with OKEN Scanner

माघ मेला -2026 के दौरान रेलवे स्टेशनों पर दिशावार मूवमेंट हेतु कलर कोडिंग

सूत्र/रे.स.ब्यू- माघ मेला -2026 के दौरान श्रद्धालुओं की सहज, सुरक्षित एवं भ्रम रहित आवाजाही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रयागराज मंडल द्वारा प्रमुख स्टेशनों पर दिशावार कलर कोडिंग प्रणाली लागू की जाएगी। यह व्यवस्था मंडल रेल प्रबंधक/प्रयागराज मंडल श्री रजनीश अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री हरिमोहन के नेतृत्व में क्रियान्वित की जा रही है। इस प्रणाली के अंतर्गत प्रयागराज परिक्षेत्र के प्रमुख स्टेशन प्रयागराज जंक्शन, प्रयागराज छिवकी, नैनी एवं सूबेदारगंज पर प्रत्येक दिशा के लिए अलग-अलग रंग निर्धारित किए गए हैं, ताकि श्रद्धालु स्टेशन परिसर में प्रवेश करते ही अपने गंतव्य की दिशा को सरलता से पहचान सकें और बिना किसी भ्रम के उचित यात्री आश्रय एवं प्रवेश द्वार तक पहुँच सकें।

माघ मेला -2026 में प्रमुख स्नान पर्व- पौष पूर्णिमा (3 जनवरी -2026), मकर संक्रांति (15 जनवरी -2026), मौनी अमावस्या (18 जनवरी -2026), बसंत पंचमी (23 जनवरी -2026), माघी पूर्णिमा (01 फरवरी -2026), एवं महाशिवरात्रि (15 फरवरी -2026) हैं।

प्रयागराज जंक्शन से दिशावार व्यवस्थाः

- लखनऊ/वाराणसी (बनारस) दिशा हेतु 'लाल रंग'- यात्री आश्रय संख्या 1/ गेट संख्या 1
- पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन दिशा हेतु 'नीला रंग'-यात्री आश्रय संख्या 2/गेट संख्या 2
- मानिकपुर दिशा हेतु 'पीला रंग' - यात्री आश्रय संख्या 3 / गेट संख्या 3
- कानपुर दिशा हेतु 'हरा रंग'- यात्री आश्रय संख्या 4 / गेट संख्या 4
- सभी दिशाओं में यात्रा करने वाले आरक्षित यात्री 'सिटी साइड स्थित गेट संख्या 5' से प्रवेश करेंगे।

नैनी जंक्शन से दिशावार व्यवस्थाः

- कानपुर दिशा हेतु 'हरा रंग' - यात्री आश्रय संख्या 1/ गेट संख्या 1
- झाँसी दिशा हेतु 'नीला रंग' - यात्री आश्रय संख्या 2 / गेट संख्या 1
- सतना दिशा हेतु 'लाल रंग' - यात्री आश्रय संख्या 3 / गेट संख्या 1
- पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन दिशा हेतु 'पीला रंग' - यात्री आश्रय संख्या-4A एवं 4B / गेट संख्या-3 एवं 4
- सभी दिशाओं में यात्रा करने वाले आरक्षित यात्री 'गेट संख्या 2'

प्रयागराज छिवकी स्टेशन से दिशावार व्यवस्थाः

- पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन दिशा हेतु 'हरा रंग' - यात्री आश्रय संख्या 1/ गेट संख्या 1 ए
- मानिकपुर दिशा हेतु 'लाल रंग' - यात्री आश्रय संख्या 2/ गेट संख्या 1 बी
- सभी दिशाओं में यात्रा करने वाले 'आरक्षित यात्री' आश्रय संख्या 4/ गेट संख्या 3

सूबेदारगंज स्टेशन से दिशावार व्यवस्थाः

- कानपुर, आगरा, दिल्ली दिशा हेतु :- प्रवेश द्वार 'संख्या 1'
- सभी दिशाओं में यात्रा करने वाले 'आरक्षित यात्री' गेट संख्या 3

इस कलर कोडिंग व्यवस्था के माध्यम से स्टेशन पर आने वाले श्रद्धालु बिना किसी अतिरिक्त पूछताछ के यह स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे कि उन्हें अपनी गंतव्य दिशा की ट्रेन के लिए किस रंग के यात्री आश्रय एवं किस गेट से जाना है । इससे यात्रियों में भ्रम की स्थिति समाप्त होगी, भीड़ का संतुलित वितरण सुनिश्चित होगा तथा माघ मेला अवधि के दौरान स्टेशन परिसरों में सुचारु, सुरक्षित एवं नियंत्रित आवागमन बना रहेगा।

मण्डलायुक्त ने माघ मेला-2026 के दृष्टिगत तैयारियों का निरीक्षण कर जायजा लिया

घाटों पर साफ-सफाई, चेंजिंग रूम, साइनेज, विद्युत पोलों पर नम्बरिंग पानी में बैरिकेटिंग लगाये जाने के दिए निर्देश

सूत्र/रे.स.ब्यू- मण्डलायुक्त श्रीमती सौम्या अग्रवाल ने मेलाधिकारी श्री ऋषिराज एवं एसएसपी मेला श्री नीरज पाण्डेय के साथ माघ मेला-2026 के दृष्टिगत हो रही तैयारियों का निरीक्षण कर जायजा लिया तथा सभी सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने सर्वप्रथम संगम नोज पर स्नानार्थियों के लिए बनाये जा रहे घाटों का निरीक्षण किया। उन्होंने संगम नोज पर प्रमुख स्नान पर्वो पर स्नानार्थियों के लिए सर्कुलेटिंग एरिया बढ़ाये जाने के कार्य व स्नान हेतु घाटों के विस्तारीकरण एवं संगम नोज पर गंगा नदी के तेज प्रवाह के कारण संकरे हुए स्नानघाट की चौड़ाई किस प्रकार बढ़ायी जाये, जिससे ज्यादा से ज्यादा स्नानार्थियों को सुरक्षित एवं चौड़ा घाट उपलब्ध हो सके, के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिए। अधिकारियों के साथ माघ मेला-2026 में सुगम स्नान हेतु संगम नोज से लेकर कालीमार्ग तक बनाये गये प्रत्येक घाट का निरीक्षण किया तथा वहां पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। उन्होंने घाटों के पास जमीन के समतलीकरण, वहां पर साफ-सफाई का विशेष ध्यान दिए जाने, चैंजिंग रूम, साइनेज तथा आने व जाने का मार्गों पर दिशा सूचक चिन्ह लगाये जाने, विद्युत पोलों पर नम्बरिंग करने तथा स्नान घाटों पर पानी में जहां पर अभी बैरिकेटिंग नहीं बनायी गई है, वहां पर बैरिकेटिंग लगाये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने संगम नोज सहित सभी स्नान घाटों पर भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था के बारे में विचार-विमर्श किया। मण्डलायुक्त ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ लेटे हनुमान जी मंदिर में दर्शन पूजन किया तथा निर्माणाधीन कॉरिडोर के प्रगति के बारे में जानकारी ली। उन्होंने परिसर में साफ-सफाई के निर्देश दिए है। तत्पश्चात मण्डलायुक्त ने बाघम्बरी मठ के श्रीमहंत बलवीर गिरि जी महाराज से मुलाकात कर लेटे हनुमान जी मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं एवं दर्शनार्थियों के दर्शन पूजन की व्यवस्था पर विचार-विमर्श किया।

माघ मेला-2026 के सकुशल आयोजन हेतु संयुक्त ब्रीफिंग बैठक आयोजित

सूत्र/रे.स.ब्यू- प्रयागराज में माघ मेला 2026 का आयोजन दिनांक 03 जनवरी 2026 से 15 फरवरी 2026 तक किया जा रहा है। इस अवधि में देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के रेल मार्ग से आगमन की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा एवं सुव्यवस्थित आवागमन सुनिश्चित करने हेतु उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे एवं पूर्वोत्तर रेलवे के अंतर्गत आने वाले प्रमुख स्टेशनों पर व्यापक एवं समन्वित तैयारियाँ की जा रही हैं।

इन्हीं तैयारियों के क्रम में दिनांक 30 दिसंबर 2025 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, प्रयागराज के सभागार कक्ष में संयुक्त ब्रीफिंग/समन्वय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में रेलवे सुरक्षा बल (RPF), राजकीय रेलवे पुलिस (GRP), वाणिज्य शाखा तथा परिचालन शाखा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता रही। इस संयुक्त ब्रीफिंग सभा में एडीजी रेलवे श्री प्रकाश डी, IPS, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, रेलवे सुरक्षा बल, उत्तर मध्य रेलवे, श्री प्रदीप कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक, प्रयागराज मंडल, श्री रजनीश अग्रवाल, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त/प्रयागराज, श्री विजय प्रकाश पंडित, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री हरिमोहन, एसपी, जीआरपी श्री प्रशांत वर्मा, IPS सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं स्टाफ उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान माघ मेला अवधि में भीड़ प्रबंधन, यात्री सुरक्षा, स्टेशन परिसरों की सुव्यवस्था, आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की कार्ययोजना तथा अंतर-विभागीय समन्वय जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। अधिकारियों द्वारा यह भी निर्देशित किया गया कि पूर्व में आयोजित बड़े धार्मिक आयोजनों के दौरान प्राप्त अनुभवों एवं सफल कार्यप्रणालियों का प्रभावी उपयोग माघ मेला 2026 में किया जाए, ताकि श्रद्धालुओं को निर्बाध, सुरक्षित एवं सुचारु रेल सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें। रेल प्रशासन माघ मेला 2026 के दौरान श्रद्धालुओं को सुरक्षित, सुविधाजनक एवं सुचारु रेल सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

माघ मेला 2026 में करोड़ों श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए डिजिटल पहल।

सूत्र/रे.स.ब्यू- माघ मेला 2026 में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा एवं त्वरित सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मेला क्षेत्र में विद्युत पोलों पर क्यू-आर-कोड आधारित सुविधा प्रणाली लागू की गई है। यह व्यवस्था मेला सेवा एप के माध्यम से श्रद्धालुओं को सीधे प्रशासन से जोड़ने की एक अभिनव पहल है। मेला क्षेत्र में लगाए गए 15500 विद्युत पोलों पर लगे क्यू-आर-कोड को स्कैन करते ही श्रद्धालुओं के मोबाइल पर एक ऑनलाइन फॉर्म खुलेगा। इस फॉर्म में श्रद्धालु अपना नाम, मोबाइल नंबर और सुरक्षा कोड भरकर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं या आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। खास बात यह है कि मेला अवधि में लाउडस्पीकरों के शोर के कारण फोन पर शिकायत करना कठिन हो जाता है, ऐसे में क्यू-आर-कोड के माध्यम से 24X7 संचालित कंट्रोल रूम तक डिजिटल रूप से शिकायत पहुंचाई जा सकती है, जिससे त्वरित निस्तारण संभव हो सकेगा। क्यू-आर-कोड स्कैन करने पर श्रद्धालु अपनी सही लोकेशन प्रशासन के साथ साझा करते हुए तत्काल सहायता प्राप्त कर सकेंगे। प्रत्येक विद्युत पोल पर संबंधित सड़क का नाम, सेक्टर का नाम और गूगल कोड (जी-कोड) अंकित किया गया है, जिससे श्रद्धालुओं को हर समय अपनी स्थिति की जानकारी मिलती रहेगी। हर 25 मीटर के अंतराल पर लगे विद्युत पोलों पर उपलब्ध क्यू-आर-कोड के माध्यम से अस्पताल, पुलिस चौकी, घाट, पार्किंग और जन-आश्रय स्थलों की सटीक जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। क्यू-आर-कोड स्कैन करते ही मेला क्षेत्र का विस्तृत नक्शा भी उपलब्ध होगा। साथ ही यदि कोई परिचित या संबंधी खो जाता है, तो उसके नजदीकी विद्युत पोल पर लिखे गूगल कोड के माध्यम से गूगल मैप पर उसकी लोकेशन का पता भी लगाया जा सकता है। पार्किंग के समय नजदीकी पोल का जी-कोड नोट कर लेने से लौटते समय उसी स्थान पर आसानी से पहुंचा जा सकता है। सभी पोलों की यूनिक नंबरिंग होने से केवल पोल नंबर बताने से सही लोकेशन तुरंत मिल सकेगी। इसके अतिरिक्त मेला हेल्पलाइन नंबर 1920 को भी और व हद रूप में फिर से संचालित किया गया है जिसके माध्यम से लोग कंट्रोल रूम में अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

संपादकीय

नववर्ष 2026 : रेल यात्रा, हमारी सोच और राष्ट्रीय जिम्मेदारी

नववर्ष का आगमन केवल तारीख बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह हमें अपने आचरण, संवेदनाओं और नागरिक कर्तव्यों पर पुनर्विचार करने का अवसर देता है। भारतीय रेल देश की उन कुछ व्यवस्थाओं में से है, जहाँ हर वर्ग, हर उम्र और हर सोच का व्यक्ति प्रतिदिन एक-दूसरे से जुड़ता है। यह केवल पटरियों पर दौड़ती हुई ट्रेन नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामूहिक चेतना और अनुशासन का आईना है।

आज जब रेलवे निरंतर आधुनिकीकरण, तेज गति और बेहतर सुविधाओं की ओर बढ़ रहा है, तब यह अपेक्षा भी स्वाभाविक है कि यात्रियों का व्यवहार भी उसी स्तर का हो। स्टेशन परिसरों और ट्रेनों में फैली गंदगी, सार्वजनिक स्थानों पर थूकने की आदत और रेल संपत्ति के प्रति उदासीनता यह दर्शाती है कि हम विकास की दौड़ में कहीं पीछे छूट रहे हैं। स्वच्छता कोई बाहरी दबाव नहीं, बल्कि भीतर से उपजी हुई जिम्मेदारी है। साफ प्लेटफॉर्म और स्वच्छ ट्रेनें किसी एक विभाग की मेहनत का परिणाम नहीं, बल्कि हर यात्री के छोटे-छोटे अनुशासित प्रयासों से संभव होती हैं।

सुरक्षा का प्रश्न इससे भी अधिक संवेदनशील है। रेल यात्रा के दौरान यदि कोई लावारिस बैग, संदिग्ध वस्तु या असामान्य गतिविधि दिखाई देती है और हम उसे अनदेखा कर आगे बढ़ जाते हैं, तो यह चुप्पी भविष्य में बड़े खतरे का कारण बन सकती है। सतर्कता डर नहीं, बल्कि सजग नागरिकता का प्रतीक है। समय पर दी गई एक सूचना न जाने कितने जीवन सुरक्षित कर सकती है और कितने परिवारों को अपूरणीय पीड़ा से बचा सकती है।

नववर्ष 2026 हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम स्वयं से यह प्रश्न करें क्या हम केवल सुविधा लेने वाले यात्री हैं, या उस व्यवस्था के संरक्षक भी, जिससे करोड़ों लोगों की यात्रा सुरक्षित होती है। रेल के प्रति हमारा व्यवहार वास्तव में देश के प्रति हमारे दृष्टिकोण को दर्शाता है। जब हम नियमों का पालन करते हैं, स्वच्छता बनाए रखते हैं और सुरक्षा के प्रति जागरूक रहते हैं, तब हम अनजाने में ही राष्ट्र निर्माण में सहभागी बन जाते हैं।

रेल समाचार ब्यूरो का यह विश्वास है कि मजबूत रेल व्यवस्था केवल नई ट्रेनों, आधुनिक स्टेशनों या तकनीकी उन्नति से नहीं बनती, बल्कि जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिकों के सहयोग से साकार होती है। इस नववर्ष, आइए हम अपनी हर यात्रा को केवल गंतव्य तक पहुँचने का माध्यम न मानकर, अपने संस्कार और जिम्मेदारी को दर्शाने का अवसर बनाएँ।

नववर्ष 2026 देश की रेल व्यवस्था के साथ-साथ हमारी सोच में भी स्वच्छता, अनुशासन और सजगता का नया अध्याय जोड़ें यही कामना है।

प्रधान संपादक
रेल समाचार ब्यूरो

Scanned with OKEN Scanner

तकनीक और दृढ़ संकल्प की जीत - भारतीय रेलवे ने अपने सबसे कठिन घाट खंडों में से एक, सकलेशपुर-सुब्रमण्य रोड का विद्युतीकरण पूरा किया

अश्विनी वैष्णव ने कहा कि हम इस मार्ग से मंगलुरु तक वंदे भारत ट्रेन चला सकेंगे

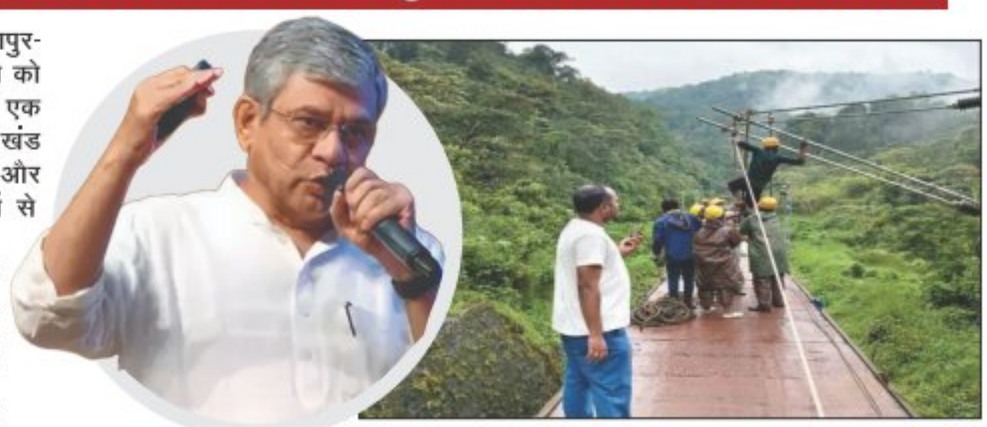

सूत्र/रे.स.ब्यू- भारतीय रेलवे ने सकलेशपुर-सुब्रमण्य रोड घाट खंड के विद्युतीकरण को पूरा करके इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह खंड भारतीय रेलवे नेटवर्क के सबसे कठिन और तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण भूभागों में से एक है।

28 दिसंबर 2025 को सफल इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव परीक्षण के साथ यह उपलब्धि हासिल हुई। इसके साथ ही, यह खंड अब इलेक्ट्रिक रेलगाड़ियों के परिचालन के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस घाट खंड के विद्युतीकरण के साथ, समूचा बेंगलुरु-मंगलुरु रेल मार्ग अब पूर्णतः विद्युतीकृत हो गया है। इससे क्षेत्र में रेल संपर्क, परिचालन दक्षता और स्थिरता में सुधार होगा। यह परियोजना वंदे भारत और अन्य तीव्र गति वाली इलेक्ट्रिक रेलगाड़ियों के परिचालन को भी सक्षम बनाएगी, जिससे तटीय क्षेत्र में तेज, स्वच्छ और अधिक विश्वसनीय यात्रा संभव हो सकेगी।

सकलेशपुर और सुब्रमण्य रोड के बीच स्थित घाट खंड का विद्युतीकरण 55 किलोमीटर तक फैला हुआ है। यह भूभाग अत्यंत जटिल है और रेलवे ट्रैक तक पहुँचने के लिए कोई सड़क नहीं है। इसमें 1:50 की तीव्र ढलान, 57 सुरंगें, 226 पुल और 108 कठिन मोड़ शामिल हैं। यह क्षेत्र मानसून के दौरान भूस्खलन के लिए भी अत्यधिक संवेदनशील है। इसलिए इस खंड का विद्युतीकरण करना एक महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग चुनौती थी।

विद्युतीकरण का कार्य दिसंबर 2023 में शुरू हुआ। इस परियोजना में पांच स्विचिंग स्टेशनों का निर्माण और पूर्ण ओवरहेड विद्युतीकरण शामिल था। सुरक्षा और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए, ट्रैक्शन पोल के बीच अधिकतम दूरी 67.5 मीटर रखी गई थी।

सुरंगों के विद्युतीकरण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता थी। 57 सुरंगों में 427 मुख्य ब्रैकेट और 427 अतिरिक्त ब्रैकेट लगाए गए हैं। राष्ट्रीय रॉक मैकेनिक्स संस्थान और बैंगलोर विश्वविद्यालय के सहयोग से विस्तृत भूवैज्ञानिक अध्ययन किए गए। दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, एंकरिंग की मजबूती की जांच करने हेतु प्रत्येक ब्रैकेट के स्थान पर पुल-आउट परीक्षण किए गए।

तीव्र ढलानों के लिए विशेष उपकरणों और मजबूत इंजीनियरिंग समाधानों की आवश्यकता थी। भारी वर्षा, भूस्खलन, मिट्टी के कटाव और चट्टान गिरने से कार्य में कई बार व्यवधान आया। कई स्थानों पर, दूरस्थ और दुर्गम स्थलों तक सामान पहुँचाने के लिए रेल परिवहन का सहारा लेना पड़ा। पूरी परियोजना के दौरान कड़े सुरक्षा उपायों का पालन किया गया। तीव्र ढलानों के कारण, परियोजना के दौरान सुरक्षित और निर्बाध रेल संचालन सुनिश्चित करते हुए, काम को सावधानीपूर्वक योजना बनाकर पूरा किया गया।

विद्युतीकरण पूरा होने और परीक्षणों के सफल होने के साथ, घाट खंड अब पूरी तरह से इलेक्ट्रिक रेलगाड़ियों के लिए तैयार है। इससे ईंधन की खपत कम होगी, उत्सर्जन घटेगा और परिचालन अधिक कुशल होगा। यह क्षेत्र में वंदे भारत सेवाओं सहित आधुनिक इलेक्ट्रिक सुपरफास्ट रेल सेवाओं की शुरुआत में भी सहायक होगा।

घाट के इस महत्वपूर्ण हिस्से के विद्युतीकरण से देश की आईटी राजधानी बैंगलुरु और बंदरगाह शहर मंगलुरु के साथ-साथ अन्य तटीय वाणिज्यिक केंद्रों के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध मजबूत होंगे। इलेक्ट्रिक ट्रेनों के शुरू होने से लोगों और व्यावसायिक यात्राओं की सुगमता बढ़ेगी, जिससे तटीय क्षेत्र में व्यापार, सेवाओं और संबंधित आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

इस उपलब्धि के महत्व का उल्लेख करते हुए, केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, ''अब हम इस मार्ग से मंगलुरु तक वंदे भारत ट्रेन चला सकेंगे।''

भारतीय रेलवे ने अपने ब्रॉड गेज नेटवर्क के 99: से अधिक हिस्से का पहले ही विद्युतीकरण कर लिया है। 2014 से पहले के लगभग छह दशकों में केवल 21,801 किलोमीटर मार्ग की तुलना में 2014 से अब तक 46,900 किलोमीटर से अधिक मार्ग का विद्युतीकरण किया जा चुका है। 2019 से 2025 के बीच लगभग 33,000 किलोमीटर मार्ग का विद्युतीकरण किया गया, जो लगभग जर्मनी के समूचे रेलवे नेटवर्क के बराबर है। एक बार शेष छोटे खंडों के विद्युतीकरण पूरा होने के बाद, भारत विश्व के सबसे बड़े पूर्णतः विद्युतीकृत रेलवे नेटवर्क में से एक होगा।

बिमलगढ़ अमृत स्टेशन का आधुनिक यात्री सुविधाओं का और बेहतर बुनियादी ढांचे के साथ नवीनीकरण

नए स्टेशन भवन, प्रवेश-निकास द्वार, आवागमन क्षेत्र, प्लेटफार्म आश्रय स्थल, प्रतीक्षा कक्ष, दिव्यांगजन - अनुकूल सुविधाएं और स्थानीय कला के साथ बिमलगढ़ अमृत स्टेशन को नया रूप दिया जा रहा है

बिमलगढ़ जंक्शन, ओडिशा

सूत्र/रे.स.ब्यू- रेलवे अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत देशभर में 1300 से अधिक स्टेशनों का पुनर्विकास कर रहा है। इसका उद्देश्य बेहतर बुनियादी ढांचे, सुगम पहुंच और आधुनिक सुविधाओं के साथ यात्रियों के लिए सुविधाओं में सुधार करना है। स्थानीय जरूरतों पर आधारित यह योजना क्षेत्रीय विकास, पर्यटन और सुगम आवागमन को भी बढ़ावा देती है।

इस योजना के तहत ओडिशा के 59 स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। बिमलगढ़ रेलवे स्टेशन चयनित स्टेशनों में से एक है।

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में स्थित बिमलगढ़ स्टेशन यात्रियों और माल दोनों के आवागमन के लिए महत्वपूर्ण है। पुनर्विकास से स्टेशन अधिक स्वच्छ, सुरक्षित और यात्रियों के लिए अधिक सुविधाजनक बनेगा।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य बुनियादी ढांचे और यात्री सुविधाओं में सुधार करना है। एक नए स्टेशन भवन का निर्माण, नए प्रवेश और निकास द्वार, नया आवागमन क्षेत्र और बेहतर प्लेटफॉर्म शेल्टर यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाएंगे।

दिव्यांगजनों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करने के लिए आवागमन क्षेत्र और प्लेटफार्मों पर दिव्यांगजन शौचालय बनाए जा रहे हैं। सभी की सुगमता सुनिश्चित करने के लिए रैंप, पानी के बूथ, स्पर्शनीय पथ और ब्रेल लिपि में संकेत भी लगाए जा रहे हैं।

अन्य यात्री सुविधाओं में प्रतीक्षा कक्ष और बैठने की नई व्यवस्था शामिल हैं। प्लेटफार्म की सतहों में सुधार किया जा रहा है। मंडप और अग्रभाग के नवीनीकरण का कार्य भी इसमें शामिल है। क्षेत्रीय पहचान के लिए स्टेशन की दीवारों पर स्थानीय कला और सांस्कृतिक विषयों दर्शाया जा रहा है।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत बिमलगढ़ स्टेशन का पुनर्विकास आधुनिक, समावेशी और यात्री-केंद्रित रेलवे अवसंरचना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रेलवे ने वंदे भारत रेलगाडियों में क्षेत्रीय व्यंजनों के साथ यात्रियों के अनुभव को बेहतर बनाया है

यात्री महाराष्ट्र, गुजरात, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, केरल, बिहार और कश्मीर के क्षेत्रीय व्यंजनों का आनंद ले सकेंगे

सूत्र/रे.स.ब्यू- रेलवे ने आईआरसीटीसी के माध्यम से वंदे भारत रेलगाडियों में क्षेत्रीय व्यंजनों की सेवा शुरू की है, ताकि स्थानीय जायके के साथ यात्रियों के अनुभव को और बेहतर बनाया जा सके। इस पहल से यात्री देश के विविध व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं। यात्री 20101/20102 नागपुर-सिकंदराबाद वंदे भारत एक्सप्रेस में महाराष्ट्र के कंदा पोहा, दक्षिण भारतीय डोन्डाकाया करम पोडी फ्राई और आंध्र प्रदेश के आंध्र कोडी कुरा का स्वाद ले सकते हैं। गुजराती व्यंजन जैसे मेथी थेपला 20901 एमएमसीटी-जीएनसी वंदे भारत एक्सप्रेस में और मसाला लौकी 26902 एसबीआईवी-वीआरएल वंदे भारत एक्सप्रेस में परोसी जा रही हैं। यात्री ओडिशा की आलू फुलकोपी का आनन्द 22895 हावड़ा-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस में ले सकते हैं।

सफेद चावल, पचक्का चेरुपयार मेझुक्कू पेराती, कडाला करी, केरल पराठा, सादा दही और अप्पम के साथ पलाडा पायसम सहित केरल का पारंपरिक व्यंजन 20633/34 कासरगोड-त्रिवेंद्रम वंदे भारत एक्सप्रेस और 20631/32 मैंगलोर-त्रिवेंद्रम वंदे भारत एक्सप्रेस में उपलब्ध है, जबकि पश्चिम बंगाल का कोशा पनीर 20872 पर परोसा जा रहा है। यात्री आरओयू-एचडब्ल्यूएच वंदे भारत एक्सप्रेस और 22895 एचडब्ल्यूएच-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस में आलू पोटोल भाजा का स्वाद ले सकते हैं। चंपारण पनीर जैसे बिहार के विशिष्ट व्यंजन 22349 पीएनबीई-आरएनसी वंदे भारत एक्सप्रेस पर परोसे जा रहे हैं, जबकि चंपारण चिकन 22348 पीएनबीई-एचडब्ल्यूएच वंदे भारत एक्सप्रेस पर उपलब्ध है।

अंबल कद्दू और जम्मू चना मसाला सहित डोगरी व्यंजन रेलगाडी 26401-02 और 26403-04 में परोसे जा रहे हैं, और टमाटर चमन और केसर फिरनी आदि कश्मीरी व्यंजन रेलगाड़ी 26401/02 और 26403/04 एसवीडीके-सिना वंदे भारत एक्सप्रेस में परोसी जा रही हैं।

महाराष्ट्र का मसाला उपमा 22229 सीएसएमटी-एमएओ वंदे भारत एक्सप्रेस में उपलब्ध है, जबकि पश्चिम बंगाल का मुर्गिर झोल 22302 एनजेपी-एचडब्ल्यूएच वंदे भारत एक्सप्रेस में परोसा जा रहा है।

इस पहल के माध्यम से रेलवे भारत की समृद्ध पाक विविधता के साथ रेल यात्राओं को यादगार और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना रही है।

रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए किराए में संशोधन बदलाव, उपनगरीय सेवाओं, सीजन टिकटों और 215 किमी तक की द्वितीय श्रेणी की साधारण यात्राओं के लिए कोई किराया वृद्धि नहीं

यात्रियों पर न्यूनतम प्रभाव: शयनयान और प्रथम श्रेणी साधारण में केवल 1 पैसे प्रति किमी की बढ़ोतरी एसी एवं नॉन-एसी श्रेणियों में मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों के किराए में संशोधन 2 पैसे प्रति किमी तक सीमित वृद्धि

सूत्र/रे.स.ब्यू- रेलवे ने यात्रियों के लिए किराया वहनीय बनाने और परिचालन की स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से 26 दिसंबर 2025 से अपने यात्री किराया ढांचे को युक्तिसंगत बना दिया है। संशोधित किराया संरचना के तहत उपनगरीय सेवाओं और सीजन टिकटों के किराए में कोई बदलाव नहीं किया गया है, जिसमें उपनगरीय और गैर-उपनगरीय दोनों मार्ग शामिल हैं।

साधारण नॉन-एसी (गैर-उपनगरीय) सेवाओं के लिए द्वितीय श्रेणी साधारण, स्लीपर श्रेणी साधारण और प्रथम श्रेणी साधारण में किराए को श्रेणीबद्ध तरीके से युक्तिसंगत बनाया गया है।

साधारण द्वितीय श्रेणी में 215 किमी तक की यात्राओं के लिए किराए में कोई वृद्धि नहीं है, जिससे कम दूरी और दैनिक यात्रियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 216 किमी से 750 किमी तक की दूरी के लिए किराया 5 रुपये बढ़ाया गया है। इससे अधिक दूरी की यात्राओं के लिए वृद्धि चरणबद्ध तरीके से लागू की गई है- 751 किमी से 1250 किमी के बीच की दूरी के लिए 10 रुपये, 1251 किमी से 1750 किमी के बीच की दूरी के लिए 15 रुपये और 1751 किमी से 2250 किमी के बीच की दूरी के लिए 20 रुपये।

स्लीपर श्रेणी साधारण और प्रथम श्रेणी साधारण में गैर-उपनगरीय यात्राओं के लिए किराए में प्रति किलोमीटर 1 पैसे की दर से एकसमान संशोधन किया गया है, जिससे किराए में क्रमिक और सीमित वृद्धि सुनिश्चित हुई है।

मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में नॉन-एसी और एसी दोनों श्रेणियों में किराए में 2 पैसे प्रति किलोमीटर की बढ़ोतरी की गई है। इसमें स्लीपर क्लास, फर्स्ट क्लास, एसी चेयर कार, एसी थ्री-टियर, एसी टू-टियर और एसी फर्स्ट क्लास शामिल हैं। उदाहरण के तौर पर नॉन-एसी मेल/एक्सप्रेस कोच में 500 किलोमीटर की यात्रा के लिए यात्रियों को लगभग 10 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।

तेजस राजधानी, राजधानी, शताब्दी, दुरंतो, वंदे भारत, हमसफर, अमृत भारत, तेजस, महामाना, गतिमान, अंत्योदय, गरीब रथ, जन शताब्दी, युवा एक्सप्रेस, नमो भारत रैपिड रेल और साधारण गैर-उपनगरीय सेवाओं (जहां लागू हो, एसी एमईएमयू/डीईएमयू को छोड़कर) सहित प्रमुख रेल सेवाओं के मौजूदा मूल किरायों को अनुमोदित श्रेणीवार मूल किराया वृद्धि के अनुरूप संशोधित किया गया है। यह संशोधन सभी श्रेणियों में समान रूप से और एक क्रमबद्ध तरीके से किया गया है।

गौरतलब है कि आरक्षण शुल्क, सुपरफास्ट अधिभार या अन्य सहायक शुल्कों में कोई बदलाव नहीं किया गया है, ये सभी मौजूदा नियमों के अनुसार ही लागू रहेंगे। जीएसटी की प्रयोज्यता अपरिवर्तित रहेगी और किराए को प्रचलित मानदंडों के अनुसार किराय का पूर्णांकन जारी रहेगा।

संशोधित किराया केवल 26 दिसंबर 2025 को या उसके बाद बुक किए गए टिकटों पर लागू होगा। इस तिथि से पहले बुक किए गए टिकटों पर, चाहे यात्रा प्रभावी तिथि के बाद ही क्यों न हो, कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लगेगा।

Scanned with OKEN Scanner

Shri Saleem Ahmad assumes charge of new Chairman and Managing Director (CMD) of Rail Vikas Nigam Limited (RVNL)

Source/RSB- Shri Saleem Ahmad assumed charge of new Chairman and Managing Director (CMD) of Rail Vikas Nigam Limited (RVNL), a Navratna Central Govt. PSU under Ministry of Railways on 23 Dec 2025.Prior to this posting, Shri Saleem Ahmad was working as Director Project, NBCC (India).

He is a Civil Engineer with 33 years of experience in the construction industry. During his career, he has worked as Executive Director/Civil with Delhi Metro Rail Corporation (DMRC) Ltd. and with the Mumbai Port Trust. Shri Saleem has a vast and varied experience of executing multi-dimensional large infrastructure projects and has expertise in bridges tunnels, as well as residential and commercial buildings.

He has presented papers on sustainable infrastructure and urban mobility at various national and international forums. He was also instrumental in designing and implementing last mile connectivity solutions during his long stint in Delhi Metro. He is a 1990 batch pass out Civil Engineer from the Jamia Millia Islamia University, New Delhi.

East Coast Railway Advances Major Infrastructure Upgrades in Bhubaneswar, Puri and Visakhapatnam to Double Train Originating Capacity

Source/ECoR- The East Coast Railway (ECoR) is implementing a comprehensive infrastructure overhaul to double the train-originating capacity in Bhubaneswar, Puri, and Visakhapatnam by 2030. Union Minister Shri Ashwini Vaishnaw emphasized that this initiative aims to meet the rapid growth in travel demand while reducing urban congestion through the expansion of coaching terminals & enhanced operational capacities.

Strategic Infrastructure Development

To achieve the capacity goals, the ministry is focusing on four key pillars: augmenting current terminals with more platforms and shunting facilities, creating new satellite terminals, developing mega coaching maintenance complexes, and increasing sectional capacity through multi-tracking and signaling upgrades. These actions are categorized into immediate, short-term, and long-term phases to ensure progressive benefits over the next five years.

City-Specific Action Plans

Puri: To supplement the existing six pit lines, two additional full-length integrated pit lines are under construction. The entire coaching maintenance facility is proposed to be moved to a second terminal depot on the sanctioned Puri-Konark new line, where a large-scale coaching complex will be built.

Bhubaneswar: Space constraints at the main station have led to the development of "Bhubaneswar New Station" as a satellite coaching terminal. This includes a maintenance facility with two pit lines at Mancheswar & plans for additional depots in nearby areas to balance traffic.

Visakhapatnam: A Detailed Proj-ect Report (DPR) is currently under review for yard modifications that provide six additional platforms, five additional lines, and ten stabling lines. Jaganadhpuram station, located on the proposed Kottavalasa-Anakapalle bypass, is being planned as a mega coaching maintenance depot and satellite station.

Enhancing Sectional Capacity

To support increased train volumes, the ECoR is progressing with automatic block signaling, pit line electrification, and safety fencing. Significant engineering works, including flyovers and the construction of third, fourth, fifth, and sixth lines, are underway in the Visakhapatnam and Puri areas to address operational constraints & improve nationwide connectivity.

2,626 Solar-Powered Railway Stations Supporting Cleaner and Sustainable Railway Operations

Source/PIB-Indian Railways has made strong progress in using solar energy across its rail network. At present, 2,626 railway stations are utilising solar power. This wide scale adoption is helping reduce energy costs. It is also supporting a steady shift towards cleaner and more sustainable railway operations across the country. This momentum has increased further in the current financial year. Up to November, 318 stations have been added to the solar network. With these additions, the total number of solar-powered railway stations has reached 2,626. Railways has achieved a major milestone in clean energy use. By November 2025, it has commissioned 898 MW of solar power for its opera-tions. This is a sharp increase from just 3.68 MW in 2014. It marks an expansion of nearly 244 times over the 2014 level. Of the total commissioned capacity, 629 MW is being utilised for traction purposes. It directly supports electric train operations. The remaining 269 MW meets nontraction needs. These include station lighting, workshops, service buildings and railway quarters. This balanced use of solar power reduces dependence on conventional energy. It also improves the overall efficiency of railway operations.

Solar installations at stations, buildings, and railway land are meeting the growing energy needs of Indian Railways. They are doing so in a clean and sustainable way. These efforts are improving energy security. They are also supporting decarbonisation goals. Such measures reaffirm Indian Railways' commitment to achieve Net Zero Carbon Emissions by 2030

HON'BLE CHIEF MINISTER INAUGURATES NEW DELHI METRO MUSEUM AT SUPREME COURT STATION

Source/DMRC- Delhi's Chief Minister, Smt. Rekha Gupta, inaugurated the state-of-the-art Delhi Metro Museum at the Supreme Court Metro Station on December 17, 2025. The ceremony was attended by Health and Transport Minister Dr. Pankaj Kumar Singh and DMRC Managing Director Dr. Vikas Kumar.

Museum Highlights: Spanning approximately 12,000 square feet in its first phase, the museum is designed to global standards and offers interactive experiences:.

Interactive Learning: Train-driving simulators, quiz screens, and digital games about metro construction.

Engineering Displays: Working models of Tunnel Boring Machines (TBM) and Launching Girders.

Special Exhibits: A dedicated panel for "Metroman" Dr. E. Sreedharan, a mock metro tunnel, and an Operations Control Centre model.

History & Heritage: Over 50 panels and dioramas depicting Delhi landmarks and the system's 30-year evolution.

Amenities: Selfie points and a souvenir shop.

Legacy and Transition: The original Metro Museum opened at Patel Chowk in 2008 as the first of its kind in South Asia. With the launch of this larger, more interactive facility, the Patel Chowk museum has officially closed. The Chief Minister noted that the new museum serves as a powerful example of expert engineering and vision for future generations.

Visiting Information:

Public Opening: December 19, 2025.
Timings: 10 am to 4 pm (Tuesday to Sunday).
Closed: Mondays and public holidays.
Entry Fee: ₹10 per person.
Location: Supreme Court Metro Station (Blue Line), conveniently accessible by road and rail, near Bharat Mandapam.

RITES & Botswana Government sign MoU to Modernise Railway and Transport Infrastructure in Botswana

Source/RITES - RITES Ltd., a prime transport infrastructure consultancy, signed a Memorandum of Understanding (MoU) with the Government of the Republic of Botswana, represented by its Ministry of Transport and Infrastructure, to collaborate on the development & modernisation of transport infrastructure in Botswana.

The partnership aims to accelerate the growth of Botswana's railway and transport infrastructure by deploying advanced technologies, global best practices, and capacity-building initiatives to strengthen local capabilities and enhance efficiency, safety, and reliability across the sector. Under the MoU, Botswana will draw upon RITES Limited's extensive technical expertise for the development and modernisation of railway systems. RITES' scope of support will include the supply of rolling stock; commissioning, repair, operation and maintenance support for railway systems; and modernisation of workshops. The collaboration will also cover transport infrastructure development projects spanning railways, highways, bridges, airports, and buildings. In addition, RITES will provide capacity-building and technical training programmes, facilitate knowledge exchange, deliver quality assurance services including third-party inspections, preshipment inspections, and final acceptance testing and deploy advanced information technology solutions such as integrated train operations and passenger management systems

Jyoti AI Smart Glasses for Visually Impaired Railway Employees

Source/NR- In line with the provisions of the Rights of Persons with Disabilities (PwBD) Act, 2016, the Central Staff Benefit Fund Committee proudly hosted a live demonstration of Advanced Assistive Devices on December 31, 2025, at the General Manager's Conference Hall, NDBH.

The event was attended by Shri Ashok Kumar Verma, General Manager/NR, Shri Mohit Chandra, Additional General Manager/NR, Principal Chief Personnel Officer/NR, along with all PHODs and representatives of recognised Unions and Associations of Northern Railway. During the demonstration, visually impaired railway employees who have been provided with Jyoti AI Smart Glasses presented the live functioning of these devices. Their firsthand accounts underscored the glasses' utility and effectiveness in enhancing their work experience.

The feedback received from the visually impaired railway employees was overwhelmingly positive. All PHODs and Union representatives agreed on the significant benefits these smart glasses would provide to visually impaired employees in performing their official duties. Consequently, it was recommended that Jyoti AI Smart Glasses be made available to all visually impaired employees throughout Northern Railway. This initiative reinforces our commitment to inclusivity and ensures that all employees, regardless of their challenges, are equipped with the necessary tools to perform their roles efficiently.

Scanned with OKEN Scanner

माघ मेला 2026

आवश्यक सूचना

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेल यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए माघ मेला-2026 के दौरान रेलगाड़ियों के विस्तार का निर्णय लिया है, जिसका विवरण निम्नवत् हैः-

गाड़ी सं. 11273/11274 इटारसी-प्रयागराज छिवकी एक्सप्रेस (प्रतिदिन) का चुनार तक विस्तार

गाड़ी संख्या-11273 इटारसी-चुनार			गाड़ी संख्या-11274 चुनार-इटारसी	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	17:15	इटारसी ▲	11:30	----
06:50	06:52	मानिकपुर	23:05	23:07
09:55	10:15	प्रयागराज छिवकी	19:45	20:15
11:10	11:12	मेजा रोड	18:08	18:10
11:30	11:32	माण्डा रोड	17:45	17:47
11:58	12:00	विन्ध्याचल	17:13	17:15
12:13	12:15	मिर्ज़ापुर	16:55	16:57
13:30	----	चुनार ▼	----	16:30

इटारसी सेः- गाड़ी संख्या 11273, दिनांक 01.01.2026 से 16.02.2026
चुनार सेः- गाड़ी संख्या 11274, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 63237/63238 प. दीनदयाल उपाध्याय-सूबेदारगंज मेमू (प्रतिदिन) का फतेहपुर तक विस्तार

गाड़ी संख्या - 63237 प. दीनदयाल उपाध्याय - फतेहपुर			गाड़ी संख्या - 63238 फतेहपुर - प. दीनदयाल उपाध्याय	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	04:00	प. दीनदयाल उपाध्याय ▲	23:55	----
09:00	09:15	प्रयागराज	18:20	18:35
09:25	09:27	सूबेदारगंज	17:30	17:32
09:53	09:55	भरवारी	16:33	16:35
10:13	10:15	सिराथू	16:13	16:15
10:40	10:42	खागा	15:28	15:30
12:00	----	फतेहपुर ▼	----	15:00

प. दीनदयाल उपाध्याय सेः- गाड़ी संख्या 63237, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026 **फतेहपुर सेः-** गाड़ी संख्या 63238, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 64629/64630 कानपुर सेंट्रल-फफूंद मेमू (प्रतिदिन) का प्रयागराज तक विस्तार

गाड़ी संख्या-64630 फफूंद-प्रयागराज			गाड़ी संख्या-64629 प्रयागराज-फफूंद	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	08:15	फफूंद ▲	20:10	----
09:55	10:05	कानपुर सेंट्रल	18:00	18:10
10:10	10:12	सरसौल	17:05	17:07
11:08	11:10	बिन्दकी रोड	16:45	16:47
11:28	11:30	मलवां	16:30	16:32
11:45	11:50	फतेहपुर	16:10	16:15
13:30	----	प्रयागराज ▼	----	13:50

फफूंद सेः- गाड़ी संख्या 64630, दिनांक 02.01.2026 से 05.01.2026, 13.01.2026 से 20.01.2026, 22.01.2026 से 25.01.2026, 31.01.2026 से 03.02.2026, 14.02.2026 से 17.02.2026
प्रयागराज सेः- गाड़ी संख्या 64629, दिनांक 02.01.2026 से 05.01.2026, 13.01.2026 से 20.01.2026, 22.01.2026 से 25.01.2026, 31.01.2026 से 03.02.2026, 14.02.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 64595/64596 प. दीनदयाल उपाध्याय-सूबेदारगंज मेमू (प्रतिदिन) का फतेहपुर तक विस्तार

गाड़ी संख्या - 64595 प. दीनदयाल उपाध्याय - फतेहपुर			गाड़ी संख्या - 64596 फतेहपुर - प. दीनदयाल उपाध्याय	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	16:30	प. दीनदयाल उपाध्याय ▲	11:55	----
20:35	20:50	प्रयागराज	07:15	07:30
21:30	21:32	भरवारी	06:05	06:07
22:05	22:07	सिराथू	05:33	05:35
22:38	22:40	खागा	05:03	05:05
23:30	----	फतेहपुर ▼	----	04:35

प. दीनदयाल उपाध्याय सेः- गाड़ी संख्या 64595, दिनांक 01.01.2026 से 16.02.2026 **फतेहपुर सेः-** गाड़ी संख्या 64596, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 64591/64592 कानपुर सेंट्रल-सुबेदारगंज मेमू (प्रतिदिन) का चुनार तक विस्तार

गाड़ी संख्या-64592 कानपुर सेंट्रल-चुनार			गाड़ी संख्या-64591 चुनार-कानपुर सेंट्रल	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	14:50	कानपुर सेंट्रल ▲	11:30	----
20:30	20:35	सूबेदारगंज	06:05	06:10
21:05	21:15	प्रयागराज	05:45	05:55
21:30	21:32	नैनी	05:28	05:30
22:05	22:07	मेजा रोड	05:05	05:07
22:45	22:47	माण्डा रोड	04:45	04:47
23:20	23:22	विन्ध्याचल	03:40	03:42
23:40	23:42	मिर्ज़ापुर	03:28	03:30
02:00	----	चुनार ▼	----	03:05

कानपुर सेंट्रल सेः- गाड़ी संख्या 64592, दिनांक 01.01.2026 से 16.02.2026
चुनार सेः- गाड़ी संख्या 64591, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 64593/64594 कानपुर सेंट्रल-फतेहपुर मेमू (प्रतिदिन) का प्रयागराज तक विस्तार

गाड़ी संख्या - 64594 कानपुर सेंट्रल - प्रयागराज			गाड़ी संख्या - 64593 प्रयागराज - कानपुर सेंट्रल	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	18:25	कानपुर सेंट्रल ▲	10:00	----
20:40	20:45	फतेहपुर	07:10	07:20
21:15	21:17	खागा	04:20	04:22
21:38	21:40	सिराथू	03:33	03:35
22:03	22:05	भरवारी	02:53	02:55
01:30	----	प्रयागराज ▼	----	02:15

कानपुर सेंट्रल सेः- गाड़ी संख्या 64594, दिनांक 01.01.2026 से 16.02.2026
प्रयागराज सेः- गाड़ी संख्या 64593, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

गाड़ी सं. 64603/64604 कानपुर सेंट्रल-इटावा मेमू (प्रतिदिन) का फतेहपुर तक विस्तार

गाड़ी संख्या-64604 इटावा-फतेहपुर			गाड़ी संख्या-64603 फतेहपुर-इटावा	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
----	17:20	इटावा ▲	10:00	----
20:15	20:25	कानपुर सेंट्रल	06:45	06:50
20:50	20:52	सरसौल	05:38	05:40
21:10	21:12	बिन्दकी रोड	05:15	05:17
21:28	21:30	मलवां	05:00	05:02
22:30	----	फतेहपुर ▼	----	04:45

इटावा सेः- गाड़ी संख्या 64604, दिनांक 01.01.2026 से 16.02.2026
फतेहपुर सेः- गाड़ी संख्या 64603, दिनांक 02.01.2026 से 17.02.2026

नोटः- ट्रेनों से सम्बंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139 या Rail Madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

माघ मेला 2026 रेलवे टोल फ्री नं0 **1800 4199 139** | उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 2539/25(A)

Scanned with OKEN Scanner